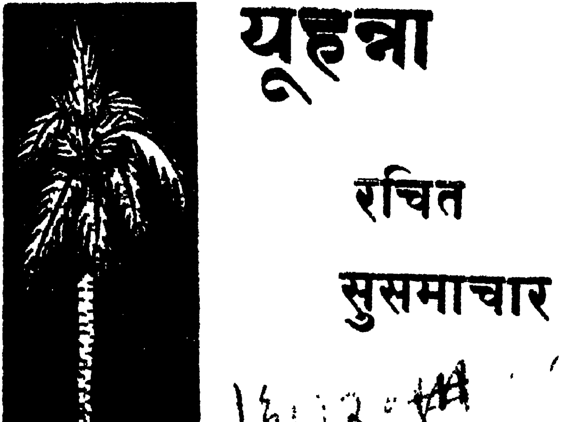
यूहन्ना

रचित

सुसमाचार

दाम एक पैसा।



यूहन्ना रचित सुसमाचार ।

—:*:—

१ आदि में बचन था और बचन परमेश्वर के साथ
था और बचन परमेश्वर था । २ यही आदि में
परमेश्वर के साथ था । ३ सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ
और जो कुछ उत्पन्न हुआ उस में से कोई भी वस्तु उस के
बिना उत्पन्न न हुई । ४ उस में जीवन था और वह जीवन
मनुष्यों की ज्योति थी । ५ और ज्योति अंधकार में चमकती
है और अंधकार ने उसे ग्रहण न किया । ६ एक मनुष्य
परमेश्वर की ओर से भेजा हुआ आया जिस का नाम यूहन्ना
था । ७ यह गवाही देने आया कि ज्योति की गवाही दे कि
सब उस के द्वारा विश्वास करें । ८ वह आप तो ज्योति न
था पर उस ज्योति की गवाही देने को आया था । ९ सच्ची
ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है जगत में
आनेवाली थी । १० वह जगत में था और जगत उस के
द्वारा हुआ और जगत ने उसे न पहचाना । ११ वह अपनों
के पास आया और उस के अपनों ने उसे ग्रहण न किया ।
१२ पर जितनों ने उसे ग्रहण किया उस ने उन्हें परमेश्वर के
सन्तान होने का अधिकार दिया अर्थात उन्हें जो उस के
नाम पर विश्वास करते हैं । १३ वे न लोहू से न शरीर की

इच्छा से न मनुष्य की इच्छा से परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए
हैं। १४ और बचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई
से भरपूर होकर हमारे बीच में डेरा किया और हम ने उस
की ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा।
१५ यूहन्ना ने उस की गवाही दी और पुकारकर कहा कि
यह वही है जिस की चरचा मैं ने की कि जो मेरे पीछे आने-
वाला है वह मुझ से बढ़कर ठहरा क्योंकि वह मुझ से पहिले
था। १६ उस की भरपूरी से हम सब ने पाया बरन अनु-
ग्रह पर अनुग्रह पाया। १७ क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा
दी गई अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची।
१८ किसी ने परमेश्वर को कभी नहीं देखा एकलौता पुत्र
जो पिता की गोद में है उसी ने प्रगट किया॥

१९ यूहन्ना की गवाही यह है कि जब यहूदियों ने
यरूशलेम से याजकों और लेवीयों को उस से यह पूछने को
भेजा कि तू कौन है। २० तो उस ने मान लिया और मुकरा
नहीं पर मान लिया कि मैं मसीह नहीं हूं। २१ तब
उन्हों ने उस से पूछा तो कौन क्या तू एलिय्याह है। उस
ने कहा मैं नहीं हूं। तो क्या तू वह नबी है। उस ने उत्तर
दिया कि नहीं। २२ फिर उन्हों ने उस से पूछा तू कौन है
कि हम अपने भेजनेवालों को उत्तर दें तू अपने विषय में
क्या कहता है। २३ उस ने कहा मैं जैसा यशायाह नबी ने
कहा है किसी का शब्द हूँ जो जंगल में पुकारता है कि प्रभु

का मार्ग सुधारो । २४ और ये फरीसियों की ओर से भेजे
गए थे । २५ उन्हों ने उस से पूछा कि यदि तू न मसीह
और न एलिय्याह और न वह नबी है तो फिर क्यों बपति-
समा देता है । २६ यूहन्ना ने उन को उत्तर दिया कि मैं तो
पानी से बपतिस्मा देता हूं पर तुम्हारे बीच में एक जन
खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते । २७ वही मेरे पीछे आने
वाला है जिस की जूती का बन्ध मैं खोलने के योग्य नहीं ।
२८ ये बातें यरदन के पार बैतनिय्याह में हुईं जहां यूहन्ना
बपतिसमा देता था ॥

२९ दूसरे दिन उस ने यीशु को अपने पास आते देख-
कर कहा देखो परमेश्वर का मेम्ना जो जगत का पाप हर ले
जाता है । ३० यह वही है जिस के विषय में मैं ने कहा था
कि एक पुरुष मेरे पीछे आता है जो मुझ से बढ़कर ठहरा
क्योंकि वह मुझ से पहिले था । ३१ मैं उसे पहचानता न
था पर इस लिये मैं पानी से बपतिसमा देता हुआ आया
कि वह इस्राएल पर प्रगट हो जाए । ३२ और यूहन्ना ने
गवाही दी कि मैं ने आत्मा को कबूतर की नाईं आकाश से
उतरते देखा और वह उस पर ठहर गया । ३३ और मैं तो
उसे पहचानता न था पर जिस ने मुझे पानी से बपतिसमा
देने को भेजा उसी ने मुझ से कहा कि जिस पर तू आत्मा को
उतरते और ठहरते देखे वही तो पवित्र आत्मा से बपतिसमा

देनेवाला है। ३४ और मैं ने देखा और गवाही दी है कि
यही परमेश्वर का पुत्र है॥

३५ फिर दूसरे दिन यूहन्ना और उस के चेलों में से
दो जन खड़े हुए थे। ३६ और उस ने यीशु को फिरते हुए
देख कर कहा देखो परमेश्वर का मेम्ना ३७ तब वे दोनों
चेले उस की यह सुनकर यीशु के पीछे हो लिए। ३८ यीशु
ने मुंह फेर उन को पीछे आते देखकर उन से कहा किस
की खोज में हो। उन्हों ने उस से कहा हे रब्बी अर्थात हे
गुरु तू कहां रहता है। ३९ उस ने उन से कहा चलो तो देख
लोगे। उन्हों ने आकर उस के रहने की जगह देखी और
उस दिन उसी के साथ रहे और यह दसवें घंटे के लगभग
था। ४० उन दोनों में से जो यूहन्ना की सुनकर यीशु के
पीछे हो लिए थे एक तो शमौन पतरस का भाई अन्द्रि-
यास था। ४१ उस ने पहिले अपने सगे भाई शमौन से
मिलकर कहा हमें तो मसीह अर्थात ख्रीष्टुस मिल गया है।
४२ वह उसे यीशु के पास लाया यीशु ने उस को देखकर
कहा तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है तू केफा अर्थात पतरस कह-
लाएगा॥

४३ दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाना चाहा और
फिलिप्पुस से मिलकर कहा मेरे पीछे हो ले। ४४ फिलि-
प्पुस तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का रहने-
वाला था। ४५ फिलिप्पुस ने नतनएल से मिलकर कहा कि

जिस की चरचा मूसा ने व्यवस्था में और नबियों ने की है
वह हम को मिल गया वह यूसुफ का पुत्र नासरत का यीशु
है । ४६ नतनएल ने उस से कहा क्या कोई अच्छी वस्तु
नासरत से निकल सकती है । फिलिप्पुस ने उस से कहा
चलकर देख ले । ४७ यीशु ने नतनएल को अपने पास आते
देखकर उस के विषय में कहा देखो यह सचमुच इस्राईली
है इस में कपट नहीं । ४८ नतनएल ने उस से कहा तू मुझे
कब से पहचानता है । यीशु ने उस को उत्तर दिया उस से
पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया जब तू अंजीर के पेड़
तले था तब मैं ने तुझे देखा था । ४९ नतनएल ने उस को
उत्तर दिया कि हे रब्बी तू परमेश्वर का पुत्र है तू इस्राईल
का राजा है । ५० यीशु ने उस को उत्तर दिया मैं ने जो
तुझ से कहा कि मैं ने तुझे अंजीर के पेड़ तले देखा क्या तू
इसी लिये विश्वास करता है । ५१ तू इस से बड़े बड़े काम
देखेगा । फिर उस से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं
तुम स्वर्ग को खुला और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य
के पुत्र के ऊपर से चढ़ते उतरते देखोगे ॥

२ तीसरे दिन गलील के काना में किसी का ब्याह
१. था और यीशु की माता वहां थी । २ और यीशु
और उस के चेले भी उस ब्याह में नेवते गए थे । ३ जब
दाखरस घट गया तो यीशु की माता ने उस से कहा उन के
पास दाखरस नहीं रहा । ४ यीशु ने उस सेकहा हे नारी

तेरा मुझ से क्या काम । ५ अभी मेरा समय नहीं आया ।
उस की माता ने सेवकों से कहा जो कुछ वह तुम से कहे
वह करना । ६ वहां यहूदियों की शुद्ध करने की रीति के
अनुसार पत्थर के छः मटके धरे थे जिन में दो दो तीन तीन
मन समाता था । ७ यीशु ने उन से कहा मटकों में पानी
भर दो सो उन्हों ने उन्हें मुंहामुंह भर दिया । ८ तब उस ने
उन से कहा अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले
जाओ । ९ वे ले गये । जब भोज के प्रधान ने वह पानी
चखा जो दाखरस बन गया था और न जानता था कि वह
कहां से आया है (पर जिन सेवकों ने पानी निकाला था
वे जानते थे) तो भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाकर । १०
उस से कहा हर एक मनुष्य पहले अच्छा दाखरस देता और
जब लोग पीकर छक जाते हैं तब मध्यम देता है तू ने अच्छा
दाखरस अब तक रख छोड़ा है । ११ यीशु ने गलील के
काना में अपना यह पहिला चिन्ह दिखाकर अपनी महिमा
प्रगट की और उस के चेलों ने उस पर विश्वास किया ॥

१२ इस के पीछे वह और उस की माता और उस के
भाई और उस के चेले कफरनहूम को गए और वहां कुछ
दिन रहे ॥

१३ यहूदियों का फसह निकट था और यीशु यरूशलेम
को गया । १४ और उस ने मन्दिर में बैल और भेड़ और
कबूतर के बेचनेवालों और सर्राफों को बैठे हुए पाया । १५

और रस्सियों का कोड़ा बनाकर सब भेड़ों और बैलों को
मन्दिर से निकाल दिया और सर्राफों के पैसे बिथरा दिए
और पीढ़ों को उलट दिया । १६ और कबूतर बेचनेवालों से
कहा इन्हें यहां से ले जाओ मेरे पिता का घर ब्योपार का
घर न बनाओ । १७ तब उस के चेलों को स्मरण आया कि
लिखा है तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी । १८ इस पर
यहूदियों ने उस से कहा तू जो यह करता है तो हमें कौन
सा चिन्ह दिखाता है । १९ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि
इस मन्दिर को ढा दो और मैं उसे तीन दिन में उठाऊंगा ।
२० यहूदियों ने कहा इस मन्दिर के बनाने में छियालीस
बरस लगे हैं और तू क्या तीन दिन में इसे उठाएगा । २१
पर उस ने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था । २२
सो जब वह मरे हुओं में से जी उठा तो उस के चेलों
को स्मरण आया कि उस ने यह कहा था और उन्हों ने
पवित्र शास्त्र की और उस बचन की जो यीशु ने कहा था
प्रतीति की ॥

२३ जब वह यरूशलेम में फसह के समय पर्ब्ब में था तो
बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर उस के
नाम पर विश्वास किया । २४ पर यीशु ने अपने आप को उन
के भरोसे न छोड़ा क्योंकि वह सब को जानता था । २५ और
उसे प्रयोजन न था कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे
क्योंकि वह आप जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है ॥

३. फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था
जो यहूदियों का सरदार था । २ उस ने रात को
यीशु के पास आकर उस से कहा हे रब्बी हम जानते हैं कि
तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है क्योंकि कोई
इन चिन्हों को जो तू दिखाता है यदि परमेश्वर उस के साथ
न हो तो नहीं दिखा सकता । ३ यीशु ने उस को उत्तर
दिया कि मैं तुझ से सच सच कहता हूँ यदि कोई नये सिरे
से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता । ४
नीकुदेमुस ने उस से कहा मनुष्य बूढ़ा होकर क्योंकर जन्म
ले सकता है क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार
जाकर जन्म ले सकता है । ५ यीशु ने उत्तर दिया कि मैं
तुझ से सच सच कहता हूं यदि कोई पानी और आत्मा से
न जन्मे तो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता ।
६ जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है और जो आत्मा से
जन्मा है वह आत्मा है । ७ अचम्भा न कर कि मैं ने तुझ
से कहा कि तुम्हें नए सिरे से जन्म लेना अवश्य है । ८ हवा
जिधर चाहती उधर चलती है और तू उस का शब्द सुनता
है पर नहीं जानता वह कहां से आती और किधर जाती
है । जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है । ९ नीकु-
देमुस ने उस को उत्तर दिया कि ये बातें क्योंकर हो सकती
हैं । १० यह सुन यीशु ने उस से कहा क्या तू इस्राईलियों
का गुरु होकर भी ये बातें नहीं समझता । ११ मैं तुझ से

सच सच कहता हूँ हम जो जानते हैं वह कहते हैं और जो
देखा है उस की गवाही देते हैं और तुम हमारी गवाही नहीं
मानते । १२ जब मैं ने तुम से पृथिवी की बातें कहीं और
तुम प्रतीति नहीं करते तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें
कहूं तो क्योंकर प्रतीति करोगे । १३ और कोई स्वर्ग पर
नहीं गया केवल वही जो स्वर्ग से उतरा अर्थात् मनुष्य का
पुत्र जो स्वर्ग में है । १४ जिस रीति से मूसा ने जंगल में
सांप को ऊंचे पर चढ़ाया उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य
का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए, १५ कि जो कोई बिश्वास
करे उस में अनन्त जीवन पाए ॥

१६ क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रक्खा कि
उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर
विश्वास करे वह नाश न हो पर अनन्त जीवन पाए । १७
परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इस लिये नहीं भेजा कि
जगत को दोषी ठहराए पर इस लिये कि जगत उसके द्वारा
उद्धार पाए । १८ जो उस पर बिश्वास करता है वह दोषी
नहीं ठहरता पर जो विश्वास नहीं करता वह दोषी ठहर चुका
इस लिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर
विश्वास नहीं किया । १९ और दोषी ठहरने का कारण यह
है कि ज्योति जगत में आई है और मनुष्यों ने अंधकार को
ज्योति से अधिक प्रेम किया इस लिये कि उन के काम बुरे
थे । २० क्योंकि जो कोई बुराई करता है वह ज्योति से बैर

रखता है और ज्योति के निकट नहीं आता न हो कि उस के
कामों पर दोष लगाया जाए। २१ पर जो सच्चाई पर चलता
है वह ज्योति के निकट आता है इस लिये कि उस के काम
प्रगट हों कि परमेश्वर की ओर से किए गए हैं॥

२२ इस के पीछे यीशु और उस के चेले यहूदिया देश में
आए और वह वहां उन के साथ रह कर बपतिसमा देने लगा।
२३ यूहन्ना भी शालेम् के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता
था क्योंकि वहां बहुत पानी था और लोग आकर बपतिस्मा-
लेते थे। २४ क्योंकि यूहन्ना उस समय तक जेलखाने में न
डाला गया था। २५ यूहन्ना के चेलों और किसी यहूदी में
शुद्ध करने के विषय में विवाद हुआ। २६ और उन्हों ने
यूहन्ना के पास आकर उस से कहा हे रब्बी जो यरदन के
पार तेरे साथ था और जिस की तू ने गवाही दी देख वह
बपतिसमा देता है और सब उस के पास आते हैं। २७
यूहन्ना ने उत्तर दिया जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया
जाय तो वह कुछ नहीं पा सकता। २८ तुम तो आप ही
मेरे गवाह हो कि मैं ने कहा मैं मसीह नहीं पर उस के आगे
भेजा गया हूँ। २९ जिस की दुलहिन है वही दूलहा है पर
दूलहे का मित्र जो खड़ा हुआ उस की सुनता है दूलहे के
शब्द से बहुत हर्षित होता है सो मेरा यह हर्ष पूरा हुआ
है। ३० अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं॥

३१ जो ऊपर से आता है वह सब से ऊपर है जो
पृथिवी से है वह पृथिवी का है और पृथिवी की बातें कहता
है जो स्वर्ग से आता है वह सब के ऊपर है । ३२ जो कुछ
उस ने देखा और सुना है उसी की गवाही देता है और
कोई उस की गवाही नहीं मानता । ३३ जिस ने उस की
गवाही मानी वह इस बात पर छाप दे चुका कि परमेश्वर
सच्चा है । ३४ इस लिये कि जिसे परमेश्वर ने भेजा है
वह परमेश्वर की बातें कहता है क्योंकि वह उस को आत्मा
नाप नापकर नहीं देता । ३५ पिता पुत्र से प्रेम रखता है और
उस ने सब कुछ उस के हाथ में दिया है । ३६ जो पुत्र पर
विश्वास करता है अनन्त जीवन उस का है पर जो पुत्र को
नहीं मानता वह जीवन नहीं देखेगा परन्तु परमेश्वर का क्रोध
उस पर रहता है ॥

४. जब प्रभु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना
है कि यीशु यहन्ना से अधिक चेले करता और
उन्हें बपतिसमा देता है, २ पर यीशु आप नहीं बरन उस
के चेले बपतिसमा देते थे, ३ तब वह यहूदिया को छोड़कर
फिर गलील को चला गया । ४ और उस को सामरिया से
होकर जाना अवश्य था । ५ सो वह सूखार नाम सामरिया
के एक नगर तक आया जो उस भूमि के पास है जिसे याकूब
ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था । ६ और याकूब का कूआं
भी वहीं था सो यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएं पर यों

ही बैठ गया और यह बात छठे घण्टे के लगभग हुई । इतने
में एक सामरी स्त्री पानी भरने को आई । ८ यीशु ने उस
से कहा मुझे पानी पिला । उस के चेले तो नगर में भोजन
मोल लेने को गए थे । ९ उस सामरी स्त्री ने उस से कहा
तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है
(क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का बरताव
नहीं रखते) १० यीशु ने उत्तर दिया यदि तू परमेश्वर के
दान को जानती और यह भी कि वह कौन है जो तुझ से
कहता है मुझे पानी पिला दे तो तू उस से मांगती और
वह तुझे जीवन का जल देता । ११ स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु
तेरे पास तो जल भरने को कुछ भी नहीं है और कूआं
गहिरा है फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहां से आया ।
१२ क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है जिस ने हमें यह
कूआं दिया और आपही अपने सन्तान और अपने ढोरों
समेत उस में से पिया । १३ यीशु ने उस को उत्तर दिया
कि जो कोई यह जल पीएगा वह फिर पियासा होगा । १४
पर जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा वह
फिर कभी पियासा न होगा बरन जो जल मैं उसे दूंगा वह
उस में अनन्त जीवन के लिये उमंडनेवाले जल का सोता
हो जाएगा । १५ स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु वह जल मुझे
दे कि मैं पियासी न होऊं न जल भरने को इतनी दूर आऊं।
१६ यीशु ने उस से कहा जा अपने पति को यहां बुला ला ।

१७ स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं बिना पति की हूं। यीशु ने उस
से कहा तू ठीक कहती है कि मैं बिना पति की हूं, १८ क्योंकि
तू पांच पति कर चुकी है और जिस के पास तू अब है वह
भी तेरा पति नहीं यह तू ने सच कहा है। १९ स्त्री ने उस से
कहा हे प्रभु मुझे जान पड़ता है कि तू नबी है। २०
हमारे बाप दादों ने इसी पहाड़ पर भजन किया और तुम
कहते हो कि वह जगह जहां भजन करना चाहिए यरूशलेम
में है। २१ यीशु ने उस से कहा हे नारी मेरी बात की प्रतीति
कर कि वह समय आता है कि तुम न इस पहाड़ पर न
यरूशलेम में पिता का भजन करोगे। २२ तुम जिसे नहीं
जानते उस का भजन करते हो और हम जिसे जानते हैं उस
का भजन करते हैं क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। २३ पर
वह समय आता है और अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता
का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे क्योंकि पिता ऐसे
भजन करनेवालों को चाहता है। २४ परमेश्वर आत्मा है
और अवश्य है कि उस के भजन करनेवाले आत्मा और
सच्चाई से भजन करें। २५ स्त्री ने उस से कहा मैं जानती
हूँ कि मसीह जो ख्रीष्ट कहलाता है आनेवाला है जब वह
आएगा तो हमें सब बातें बता देगा। २६ यीशु ने उस से
कहा मैं जो तुझ से बोल रहा हूं वही हूं॥

२७ इतने में उस के चेले आ गए और अचम्भा करने
लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है तौभी किसी ने न कहा

कि तू क्या चाहता है या किस लिये उस से बातें करता
है। २८ तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई
और लोगों से कहने लगी। २९ आओ एक मनुष्य को देखो
जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया। क्या
यही मसीह तो नहीं। ३० सो वे नगर से निकलकर उस के
पास आने लगे। ३१ इतने में उस के चेले यीशु से बिनती
करने लगे कि हे रब्बी कुछ खा ले। ३२ उस ने उन से कहा
मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं
जानते। ३३ चेलों ने आपस में कहा क्या कोई उस के लिये
कुछ खाने को लाया है। ३४ यीशु ने उन से कहा मेरा
भोजन यह है कि अपने भेजनेवाले की इच्छा पर चलूं और
उस का काम पूरा करूं। ३५ क्या तुम नहीं कहते कि कटनी
होने में अब भी चार महीने हैं। देखो मैं तुम से कहता
हूं अपनी आंखें उठा कर खेतों को देखो कि वे कटनी के
लिये पक चुके हैं। ३६ और काटनेवाला मजदूरी पाता
और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है कि बोने-
वाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें। ३७
इस में यह बात सच ठहरी कि बोनेवाला एक और काटने-
वाला दूसरा है। ३८ मैं ने तुम्हें ऐसा खेत काटने को भेजा
जिस में तुम ने मिहनत नहीं की औरों ने मिहनत की और
तुम उन की मिहनत के फल में भागी हुए॥

३९ उस नगर के बहुत सामरियों ने उस स्त्री के कहने

से जिस ने यह गवाही दी थी कि उस ने सब कुछ जो मैं ने
किया है मुझे बता दिया बिश्वास किया । ४० इस लिये
जब ये सामरी उस के पास आए तो उस से बिनती करने
लगे कि हमारे यहां रह सो वह वहां दो दिन रहा । ४१
उस के बचन के कारण और भी बहुतेरों ने बिश्वास किया ।
४२ और उस स्त्री से कहा अब हम तेरे कहने ही से बिश्वास
नहीं करते क्योंकि हम ने आप ही सुन लिया है और जान
गए कि यही सचमुच जगत का उद्धारकर्त्ता है ॥

४३ उन दो दिनों के पीछे वह वहां से निकलकर गलील
को गया । ४४ क्योंकि यीशु ने तो आप ही गवाही दी कि
नबी अपने निज देश में आदर नहीं पाता । ४५ जब वह
गलील में आया तो गलीली आनन्द के साथ उस से मिले
क्योंकि जितने काम उस ने यरूशलेम में पर्व के समय किए
थे उन्हों ने उन सब को देखा था क्योंकि वे भी पर्व में
गए थे ॥

४६ सो वह फिर गलील के काना में आया जहां उस
ने पानी को दाख रस बनाया था और राजा का एक कर्म-
चारी था जिस का पुत्र कफरनहूम में बीमार था । ४७ वह
यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गया है उस
के पास जाकर उस से बिनती करने लगा कि चलकर मेरे
पुत्र को चंगा कर दे क्योंकि वह मरने पर था । ४८ यीशु ने
उस से कहा जब तक तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखोगे

तो बिश्वास न करोगे । ४६ उस कर्मचारी ने उस से कहा
हे प्रभु मेरे बालक के मरने से पहिले चल । ५० यीशु ने
उस से कहा जा तेरा पुत्र जीता है । उस मनुष्य ने यीशु की
कही हुई बात की प्रतीति की और चला गया । ५१ वह
जा ही रहा था कि उस के दास उस से आ मिले और
कहने लगे कि तेरा लड़का जीता है । ५२ उस ने उन से
पूछा किस घड़ी उस का जी हलका हुआ । उन्हों ने उस से
कहा कल सातवें घण्टे उस की तप उतर गई । ५३ सो पिता
जान गया कि यह उसी घडी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उस
से कहा तेरा पुत्र जीता है और उस ने और उस के सारे
घराने ने बिश्वास किया । ५४ यह दूसरा चिन्ह था जो यीशु
ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया ॥

५. इन बातों के पीछे यहूदियों का एक पर्ब्ब हुआ
और यीशु यरूशलेम को गया ॥

२ यरूशलेम में भेड़ फाटक के पास एक कुण्ड है जो
इब्रानी भाषा में बेतहसदा कहलाता है और उस के पांच
ओसारे हैं । ३ इन में बहुत से बीमार अंधे लंगड़े और सूखे
अंगवाले पड़े थे । ५ वहां एक मनुष्य था जो अड़तीस
बरस से बीमारी में पड़ा था । ६ यीशु ने उसे पड़ा हुआ
देख कर और यह जान कर कि वह बहुत दिनों से इस दशा
में है उस से पूछा क्या तू चंगा होना चाहता है । ७ बीमार
ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरे पास कोई मनुष्य नहीं

कि जब जल हिलाया जाए तो मुझे कुण्ड में उतारे और
मेरे पहुँचते पहुँचते दूसरा मुझ से पहिले उतर पड़ता है।
८ यीशु ने उस से कहा उठ अपनी खाट उठाकर चल फिर।
९ वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया और अपनी खाट उठा
कर चलने फिरने लगा॥

१० उसी दिन बिश्राम का दिन था। इस लिये यहूदी
उस से जो अच्छा हुआ था कहने लगे आज तो बिश्राम का
दिन है तुझे खाट उठानी उचित नहीं। ११ उस ने उन्हें
उत्तर दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया उसी ने मुझ से
कहा अपनी खाट उठाकर चल फिर। १२ उन्हों ने उस से
पूछा वह कौन मनुष्य है जिस ने तुझ से कहा खाट उठाकर
चल फिर। १३ पर जो चंगा हो गया था वह न जानता था
वह कौन है क्योंकि उस जगह में भीड़ होने से यीशु वहां से
टल गया था। १४ इन बातों के पीछे वह यीशु को मन्दिर
में मिला तब उस ने उस से कहा देख तू चंगा हो गया है
फिर पाप न करना ऐसा न हो कि इस से कोई भारी बिपत्ति
तुझ पर आ पड़े। १५ उस मनुष्य ने आकर यहूदियों से
कह दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया वह यीशु है। १६ इस
कारण यहूदी यीशु को सताने लगे कि वह ऐसे ऐसे काम
बिश्राम के दिन करता था। १७ इस पर यीशु ने उन से
कहा कि मेरा पिता अब तक काम करता है और मैं भी काम
करता हूँ। १८ इस कारण यहूदी और भी अधिक उस के

मार डालने का यतन करने लगे कि वह न केवल बिश्राम
के दिन की बिधि को तोड़ता परन्तु परमेश्वर को अपना
निज पिता कह कर अपने आप को परमेश्वर के बराबर ठह-
राता था॥
१९ इस पर यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच
कहता हूं पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता केवल वह जो
पिता को करते देखता है क्योंकि जिन जिन कामों को वह
करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है। २० क्योंकि
पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप
करता वह सब उसे दिखाता है और वह इन से भी बड़े काम
उसे दिखाएगा कि तुम अचम्भा करो। २१ क्योंकि जैसा
पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है वैसा ही पुत्र
भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है। २२ और पिता किसी
का न्याय भी नहीं करता पर न्याय करने का सब काम पुत्र
को दिया है, २३ इस लिये कि सब लोग जैसे पिता का
आदर करते हैं वैसे पुत्र का भी आदर करें। जो पुत्र का
आदर नहीं करता वह पिता का जिस ने उसे भेजा आदर
नहीं करता। २४ मैं तुम से सच सच कहता हूं जो मेरा
बचन सुन कर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है अनन्त
जीवन उस का है और वह दोषी नहीं ठहरेगा पर मृत्यु के
पार होकर जीवन में पहुँचा है। २५ मैं तुम से सच सच
कहता हूं वह समय आता है और अब है जिस में मरे हुए

परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे और जो सुनेंगे वे जीएंगे ।
२६ क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता
है उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है
कि अपने आप में जीवन रक्खे । २७ और उसे न्याय करने
का भी अधिकार दिया है इस लिये कि वह मनुष्य का पुत्र
है । २८ इस से अचम्भा मत करो क्योंकि वह समय आता
है कि जितने कबरों में हैं वे सब उस का शब्द सुनकर निक-
लेंगे । २९ जिन्हों ने भलाई की वे जीवन के पुनरूत्थान के
लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुन-
रूत्थान के लिये जी उठेंगे ॥

३० मैं आप से कुछ नहीं कर सकता जैसा सुनता हूं वैसा
न्याय करता हूं और मेरा न्याय ठीक है क्योंकि मैं अपनी इच्छा
नहीं पर अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूं । ३१ यदि मैं
अपनी गवाही देता हूं तो मेरी गवाही सच्ची नहीं । ३२ एक
और है जो मेरी गवाही देता है और मैं जानता हूं कि मेरी
जो गवाही देता है वह सच्ची है । ३३ तुम ने यूहन्ना से पुछ-
वाया और उस ने सच्चाई की गवाही दी है । ३४ मैं मनुष्य
की गवाही नहीं चाहता तौभी मैं ये बातें इस लिये कहता
हूं कि तुम्हें उद्धार मिले । ३५ वह तो जलता और चमकता
हुआ दीपक था और तुम्हें कुछ देर तक उस की ज्योति में
मगन होना अच्छा लगा । ३६ परन्तु मेरे पास जो गवाही
है वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है क्योंकि काम जो पिता

ने मुझे पूरे करने को सौंपे हैं अर्थात् ये जो काम मैं करता
हूं वे मेरे गवाह हैं कि पिता ने मुझे भेजा है। ३७ और
पिता जिस ने मुझे भेजा है उस ने भी मेरी गवाही दी है।
तुम ने न कभी उस का शब्द सुना और न उस का रूप
देखा है। ३८ और उस का बचन तुम्हारे मन में नहीं ठहरने
पाता क्योंकि जिसे उस ने भेजा उस की प्रतीति नहीं करते।
३९ तुम पवित्रशास्त्र में ढूंढ़ते हो क्योंकि समझते हो कि उस
में अनन्त जीवन हमें मिलता है और यह वही है जो मेरी
गवाही देता है। ४० पर तुम जीवन पाने को मेरे पास आना
नहीं चाहते। ४१ मैं मनुष्यों से आदर नहीं लेता। ४२ पर
मैं तुम्हें जानता हूं कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं। ४३ मैं
अपने पिता के नाम से आया हूं और तुम मुझे ग्रहण नहीं
करते यदि कोई और अपने ही नाम से आए तो उसे ग्रहण
कर लोगे। ४४ तुम जो एक दूसरे से आदर लेते हो और
वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है नहीं चाहते
क्योंकर बिश्वास कर सकते हो। ४५ यह न समझो कि मैं
पिता के सामने तुम पर दोष लगाऊंगा। तुम पर दोष
लगानेवाला तो है अर्थात मूसा जिस पर तुम ने भरोसा
रक्खा है। ४६ क्योंकि यदि तुम मूसा की प्रतीति करते तो
मेरी भी प्रतीति करते इस लिये कि उस ने मेरे विषय में
लिखा है। ४७ पर यदि तुम उस के लिखे पर प्रतीति नहीं
करते तो मेरे कहे पर क्योंकर प्रतीति करोगे॥

६. इन बातों के पीछे यीशु गलील की अर्थात्
तिबिरियास की झील के पार गया। २ और
एक बड़ी भीड़ उस के पीछे हो ली इस कारण कि जो
अचरज कर्म वह बीमारों पर करता था वे उन को देखते थे।
३ तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर अपने चेलों के साथ वहां
बैठा। ४ और यहूदियों के फसह का पर्ब्ब निकट था। ५ तब
यीशु ने अपनी आंखें उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपने पास
आते देखा और फिलिप्पुस से कहा हम इन के भोजन के
लिये कहां से रोटी मोल लाएं। ६ पर उस ने यह बात उसे
परखने को कही क्योंकि वह आप जानता था कि मैं क्या
करूंगा। ७ फिलिप्पुस ने उस को उत्तर दिया कि दो सौ
दीनार की रोटी उन के लिये इतनी भी न होंगी कि उन में
से हर एक को थोड़ी थोड़ी मिल जाए। ८ उस के चेलों में
से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उस से कहा। ९
यहां एक लड़का है जिस के पास जव की पांच रोटी और
दो मछली हैं पर इतने लोगों के लिये वे क्या हैं। यीशु ने
कहा कि लोगों को बैठा दो। १० उस जगह बहुत घास थी
सो पुरुष जो गिनती में लगभग पांच हज़ार के थे बैठ गए।
११ सो यीशु ने रोटियां लीं और धन्यवाद करके बैठनेवालों
को बांट दीं और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे चाहते
थे। १२ जब वे तृप्त हुए तो उस ने अपने चेलों से कहा बचे
हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ फेंका न जाए। १३ सो उन्होंने

बटोरा और जव की पांच रोटियों के टुकड़े जो खानेवालों से
बच रहे उन की बारह टोकरी भरीं । १४ जो चिन्ह उस ने
दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने लगे कि सचमुच यही
वह नबी है जो जगत में आनेवाला था ॥

१५ जब यीशु ने जाना कि वे मुझे राजा बनाने के लिये
आकर पकड़ना चाहते हैं तो वह फिर पहाड़ पर अकेला
चला गया ॥

१६ जब सांझ हुई तो उस के चेले झील के किनारे
गए । १७ और नाव पर चढ़के झील के पार कफरनहूम को
जा रहे थे । उस समय अंधेरा हो गया था और यीशु उन के
पास तब तक न आया था । १८ आंधी से झील लहराने
लगी । १९ जब वे खेते खेते कोस दो एक निकल गए तो
उन्हों ने यीशु को झील पर चलते और नाव के निकट आते
देखा और डर गए । २० पर उस ने उन से कहा मैं हूं डरो
मत । २१ तब उन्हों ने उसे नाव पर चढ़ा लेना चाहा और
तुरन्त नाव उस किनारे पर जहां वे जाते थे लग गई ॥

२२ दूसरे दिन उस भीड़ ने जो झील के पार खड़ी थी
यह देखा कि यहां एक को छोड़ कर और कोई छोटी नाव
न थी और यीशु अपने चेलों के साथ उस नाव पर न चढ़ा
पर केवल उस के चेले चले गए थे । २३ (तौभी और छोटी
नावें तिबिरियास से उस जगह के निकट आईं जहां उन्हों ने
प्रभु के धन्यवाद करने के पीछे रोटी खाई थी) । २४ सो

जब भीड़ ने देखा कि यहां न यीशु है और न उस के चेले
तो वे भी छोटी छोटी नावों पर चढ़ के यीशु को ढूँढ़ते हुए
कफरनहूम को पहुँचे। २५ और झील के पार उस से मिल
कर कहा हे रब्बी तू यहां कब आया। २६ यीशु ने उन्हें
उत्तर दिया कि मैं तुम से सच सच कहता हूं तुम मुझे इस
लिये नहीं ढूँढ़ते हो कि तुम ने चिन्ह देखे पर इस लिये कि
उन रोटियों में से खाकर तृप्त हुए। २७ नाशमान भोजन के
लिये मिहनत न करो पर उस भोजन के लिये जो अनन्त
जीवन तक ठहरता है जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा क्योंकि
पिता अर्थात परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है। २८
उन्होंने उस से कहा परमेश्वर के कार्य्य करने के लिये हम
क्या करें। २९ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया परमेश्वर का कार्य्य
यह है कि तुम उस पर जिसे उस ने भेजा है बिश्वास करो।
३० उन्हों ने उस से कहा तो तू कौन सा चिन्ह दिखाता
है कि हम उसे देखकर तेरी प्रतीति करें तू कौन सा काम
दिखाता है। ३१ हमारे बाप दादों ने जंगल में मान खाया
जैसा लिखा है कि उस ने उन्हें स्वर्ग से रोटी खाने को दी।
३२ यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं मूसा
ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से न दी पर मेरा पिता तुम्हें सच्ची
रोटी स्वर्ग से देता है। ३३ क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही
है जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है। ३४ तब
उन्हों ने उस से कहा हे प्रभु यह रोटी हमें सदा दिया कर।

यीशु ने उन से कहा जीवन की रोटी मैं हूं । ३५ जो मेरे
पास आएगा सो कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर
बिश्वास करेगा वह कभी पियासा न होगा । ३६ पर मैं ने
तुम से कहा कि तुम ने मुझे देख भी लिया है तौभी बिश्वास
नहीं करते । ३७ जो पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास
आएगा और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न
निकालूंगा । ३८ क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं बरन अपने
भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं ।
३९ और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि सब जो उस
ने मुझे दिया है उस में से मैं कुछ न खोऊं पर उसे पिछले
दिन जिला उठाऊं । ४० मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो
कोई पुत्र को देखे और उस पर बिश्वास करे वह अनन्त
जीवन पाए और मैं उसे पिछले दिन में जिला उठाऊंगा ॥

४१ इस से यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने लगे इस लिये कि
उस ने कहा था कि जो रोटी स्वर्ग से उतरी वह मैं हूं । ४२
और उन्हों ने कहा क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं जिस
के माता पिता को हम जानते हैं तो वह क्योंकर कहता है
कि मैं स्वर्ग से उतरा हूं । ४३ यीशु ने उन को उत्तर दिया
कि आपस में मत कुड़कुड़ाओ । ४४ कोई मेरे पास नहीं आ
सकता जब तक पिता जिस ने मुझे भेजा है उसे खींच न ले
और मैं उस को पिछले दिन में जिला उठाऊंगा । ४५ नबियों
के लेखों में यह लिखा है कि वे सब परमेश्वर के सिखाए

हुए होंगे । जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है वह मेरे पास आता है । ४६ यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है पर जो परमेश्वर की ओर से है केवल उसी ने पिता को देखा है । ४७ मैं तुम से सच सच कहता हूं जो कोई बिश्वास करता है अनन्त जीवन उसी का है । ४८ जीवन की रोटी मैं हूं । ४९ तुम्हारे बाप दादों ने जंगल में मान खाया और मर गए । ५० यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है कि मनुष्य उस में से खाए और न मरे । जीवती रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूं । ५१ यदि कोई इस रोटी में से खाए तो सदा लों जीता रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा वह मेरा मांस है ॥

५२ इस पर यहूदी आपस में झगड़ने लगे कि यह मनुष्य क्योंकर हमें अपना मांस खाने को दे सकता है । ५३ यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूँ जब तक मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ और उस का लोहू न पीओ तुम में जीवन नहीं । ५४ जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है अनन्त जीवन उसी का है और मैं उसे पिछले दिन जिला उठाऊंगा । ५५ क्योंकि मेरा मांस सच्चा भोजन है और मेरा लोहू सच्ची पीने की वस्तु है । ५६ जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है वह मुझ में बना रहता है और मैं उस में । ५७ जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवता हूं वैसा ही वह भी

जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीएगा । ५८ जो रोटी स्वर्ग से
उतरी यही है न कि जैसा बाप दादों ने खाया और मर गए ।
जो कोई यह रोटी खाएगा वह सदा लों जीता रहेगा। ५६ उस ने
ये बातें कफरनहूम में उपदेश करते हुए सभा के घर में कहीं ॥
६० इस लिये उस के चेलों में से बहुतों ने यह सुनकर
कहा यह बात कठिन है इसे कौन सुन सकता है । ६१ यीशु
ने अपने मन में यह जान कर कि मेरे चेले इस बात पर
कुड़कुड़ाते हैं उन से पूछा क्या इस बात से तुम्हें ठोकर
लगती है । ६२ यदि मनुष्य के पुत्र को जहां वह पहिले था
वहां ऊपर जाते देखोगे तो क्या कहोगे । ६३ आत्मा तो
जीवनदायक है शरीर से कुछ लाभ नहीं जो बातें मैं ने तुम
से कही हैं वे आत्मा हैं और जीवन भी हैं । ६४ पर तुम में
से कितने ऐसे हैं जो बिश्वास नहीं करते । यीशु तो पहिले
ही जानता था कि जो बिश्वास नहीं करते वे कौन हैं और
कौन मुझे पकड़वाएगा । ६५ और उस ने कहा इसी लिये मैं
ने तुम से कहा है कि जब तक किसी को पिता की ओर से
न दिया जाए वह मेरे पास नहीं आ सकता ॥
६६ इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे फिर गए और
उस के साथ और न चले । ६७ इस लिये यीशु ने उन
बारहों से कहा क्या तुम भी चला जाना चाहते हो । ६८
शमौन पतरस ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु किस के
पास जाएं अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं । ६९

और हम ने बिश्वास किया और जान गए हैं कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है। ७० यीशु ने उन्हें उत्तर दिया क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुन लिया तौभी तुम में से एक जन शैतान है। ७१ यह उस ने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदाह के विषय में कहा क्योंकि यही जो उन बारहों में से था उसे पकड़वाने पर था॥

७ इन बातों के पीछे यीशु गलील में फिरता रहा . क्योंकि यहूदी उसे मार डालना चाहते थे इस लिये वह यहूदिया में फिरना न चाहता था। २ और यहूदियों का मण्डपों का पर्व निकट था। ३ इस लिये उस के भाइयों ने उस से कहा यहां से सिधार और यहूदिया में चला जा कि जो काम तू करता है उन्हें तेरे चेले भी देखें। ४ क्योंकि ऐसा कोई न होगा जो प्रसिद्ध होना चाहे और छिपकर काम करे। यदि तू यह काम करता है तो अपने तईं जगत को दिखा। ५ क्योंकि उस के भाई भी उस पर बिश्वास नहीं करते थे। ६ यीशु ने उन से कहा मेरा समय अब तक नहीं आया पर तुम्हारा समय सदा बना रहता है। ७ जगत तुम से बैर नहीं कर सकता पर वह मुझ से बैर करता है क्योंकि मैं उस के बिरोध में यह गवाही देता हूं कि उस के काम बुरे हैं। तुम पर्व में जाओ। ८ मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता क्योंकि मेरा समय अब तक पूरा नहीं हुआ। ९ वह उन से ये बातें कह कर गलील ही में रह गया॥

१० पर जब उस के भाई पर्ब्ब में चले गए तो वह आप
ही प्रगट में नहीं पर मानो गुप्त होकर गया। ११ सो यहूदी
पर्ब्ब में उसे यह कहकर ढूँढ़ते थे कि वह कहां है। १२ और
लोगों में उस के विषय में चुपके चुपके बहुत सी बातें हुई
कितने कहते थे वह भला मनुष्य है और कितने कहते थे
नहीं पर वह लोगों को भरमाता है। १३ तौभी यहूदियों के
डर के मारे कोई उस के विषय में खुलकर न बोलता
था॥

१४ पर्ब्ब के बीचोबीच यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश
करने लगा। १५ तब यहूदियों ने अचम्भा करके कहा इसे
बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई। १६ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया
कि मेरा उपदेश मेरा नहीं पर मेरे भेजनेवाले का है। १७
यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे तो इस उपदेश के
विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है या मैं
अपनी ओर से कहता हूं। १८ जो अपनी ओर से कहता है
वह अपनी ही बड़ाई चाहता है पर जो अपने भेजनेवाले की
बड़ाई चाहता है वही सच्चा है और उस में अधर्म नहीं। १९
क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था न दी तौभी तुम में से कोई व्यवस्था
पर नहीं चलता। तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो। २०
लोगों ने उत्तर दिया कि तुझे दुष्टात्मा लगा है कौन तुझे मार
डालना चाहता है। २१ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं ने
एक काम किया और तुम सब अचम्भा करते हो। २२ मूसा

ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी (यह नहीं कि वह मूसा की ओर
से है पर बापदादों से चली आई है) और तुम विश्राम के
दिन को मनुष्य का खतना करते हो। २३ जब विश्राम के
दिन मनुष्य का खतना किया जाता है कि मूसा की व्यवस्था
टल न जाय तो तुम मुझ पर क्यों इस लिये क्रोध करते हो
कि मैं ने विश्राम के दिन एक मनुष्य को पूरी रीति से चंगा
किया। २४ मुंह देखकर न्याय न चुकाओ पर ठीक ठीक
न्याय चुकाओ॥

२५ तब कितने यरूशलेमी कहने लगे क्या यह वही
नहीं जिसे वे मार डालना चाहते हैं। २६ पर देखो वह
खुल्लमखुल्ला बातें करता है और कोई उस से कुछ नहीं
कहता क्या सरदारों ने सच सच जान लिया है कि यही
मसीह है। २७ इस को तो हम जानते हैं कि कहां का है
पर मसीह जब आएगा तो कोई न जानेगा कि वह कहां का
है। २८ यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए पुकार के कहा
तुम मुझे जानते और यह भी जानते हो कि मैं कहां का हूं
मैं तो आप से नहीं आया पर मेरा भेजनेवाला सच्चा है उस
को तुम नहीं जानते। २९ मैं उसे जानता हूं क्योंकि मैं
उस की ओर से हूं और उसी ने मुझे भेजा है। ३० इस पर
उन्हों ने उसे पकड़ना चाहा तौभी किसी ने उस पर हाथ न
डाला क्योंकि उस का समय अब तक न आया था। ३१
और भीड़ में से बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया और कहने

लगे कि मसीह जब आएगा तो क्या इस से अधिक चिन्ह
दिखाएगा जो इस ने दिखाए। ३२ फरीसियों ने लोगों को
उस के विषय में ये बातें चुपके चुपके करते सुना और महा-
याजकों और फरीसियों ने उस के पकड़ने को प्यादे भेजे।
३३ इस पर यीशु ने कहा मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे
साथ हूं तब अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊंगा। ३४
तुम मुझे ढूँढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं हूँ वहां तुम
नहीं आ सकते। ३५ यहूदियों ने आपस में कहा यह कहां
जाएगा कि हम इसे न पाएंगे। क्या वह उन के पास
जाएगा जो यूनानियों में तित्तर बित्तर होकर रहते हैं और
यूनानियों को भी उपदेश देगा। ३६ यह क्या बात है जो
उस ने कही कि तुम मुझे ढूँढ़ोगे पर न पाओगे और जहां
मैं हूं वहां तुम नहीं आ सकते॥

३७ पिछले दिन जो पर्ब्ब का मुख्य दिन है यीशु खड़ा
हुआ और पुकार के कहा यदि कोई पियासा हो तो मेरे
पास आकर पीए। ३८ जो मुझ पर बिश्वास करेगा जैसा
पवित्र शास्त्र में आया है उस के हृदय से जीवन के जल की
नदियां बहेंगी। ३९ उस ने यह बचन उस आत्मा के विषय
में कहा जिसे उस पर बिश्वास करने वाले पाने पर थे क्योंकि
आत्मा अब तक न मिला था इस कारण कि यीशु अब
तक अपनी महिमा को न पहुँचा था। ४० सो भीड़ में से
किसी किसी ने ये बातें सुन कर कहा सचमुच वह नबी

यही है । ४१ औरों ने कहा यह मसीह है पर किसी किसी
ने कहा क्या मसीह गलील से आएगा । ४२ क्या पवित्र
शास्त्र में यह नहीं आया कि मसीह दाऊद के वंश से और
बैतलहम गांव से जहां दाऊद रहता था आएगा । ४३ सो
उस के कारण लोगों में फूट पड़ी । ४४ उन में से कितने
उसे पकड़ना चाहते थे पर किसी ने उस पर हाथ न डाला ॥

४५ तब प्यादे महायाजकों और फरीसियों के पास
आए और उन्हों ने उन से कहा तुम उसे क्यों नहीं लाए ।
४६ प्यादों ने उत्तर दिया कि किसी मनुष्य ने कभी ऐसी
बातें न कीं । ४७ फरीसियों ने उन को उत्तर दिया क्या
तुम भी भरमाए गये हो । ४८ क्या सरदारों या फरीसियों
में से किसी ने भी उस पर विश्वास किया है । ४९ पर ये
लोग जो व्यवस्था नहीं जानते स्रापित हैं । ५० नीकुदेमुस
ने जो पहिले उस के पास आया और उन में से एक था
उन से कहा, ५१ क्या हमारी व्यवस्था किसी को जब तक
पहिले उस की सुन कर जान न ले कि वह क्या करता है
दोषी ठहराती है । ५२ उन्हों ने उसे उत्तर दिया क्या तू
भी गलील का है ढूँढ़ कर देख कि गलील से कोई नबी
प्रगट नहीं होता । ५३ [तब सब कोई अपने अपने घर
को गए ॥

८. पर यीशु जैतून पहाड़ पर गया । २ और भोर
को फिर मन्दिर में आया और सब लोग उस के

पास आए और वह बैठ कर उन्हें उपदेश देने लगा । ३ तब
शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए जो व्यभिचार में
पकड़ी गई थी और इस को बीच में खड़ी करके उस से
कहा, ४ हे गुरु यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई है ।
५ व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी कि ऐसी स्त्रियों को
पत्थरवाह करें सो तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है ।
६ उन्हों ने उस को परखने के लिये यह बात कही कि उस
पर दोष लगाने के लिये कोई गौं पाएं पर यीशु झुककर
उंगली से भूमि पर लिखने लगा । ७ जब वे उस से पूछते
रहे तो उस ने सीधे होकर उन से कहा तुम में से जो
निष्पाप हो वह पहिले उस के पत्थर मारे । ८ और फिर
झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगा । ९ पर वे यह
सुन कर बड़ों से लेकर छोटों तक एक एक करके निकल गए
और यीशु अकेला रह गया और स्त्री वहीं बीच में खड़ी
रही । १० यीशु ने सीधे होकर उस से कहा हे नारी वे कहां
गए क्या किसी ने तुझ पर दंड की आज्ञा न दी । ११ उस
ने कहा हे प्रभु किसी ने नहीं । यीशु ने कहा मैं भी तुझ
पर दंड की आज्ञा नहीं देता जा और फिर पाप न करना]॥

१२ तब यीशु ने फिर लोगों से कहा मैं जगत की
ज्योति हूं जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा
पर जीवन की ज्योति पाएगा । १३ फरीसियों ने उस से कहा
तू अपनी गवाही आप देता है तेरी गवाही ठीक नहीं । १४

यीशु ने उन को उत्तर दिया कि यदि मैं अपनी गवाही आप
देता हूं तौ भी मेरी गवाही ठीक है क्योंकि मैं जानता हूं
कि कहां से आया हूं और कहां जाता हूं पर तुम नहीं जानते
कि मैं कहां से आता हूं और कहां जाता हूं । १५ तुम
शरीर के अनुसार फैसला करते हो मैं किसी का फैसला नहीं
करता । १६ और यदि मैं फैसला करूं भी तो मेरा फैसला
ठीक है क्योंकि मैं अकेला नहीं पर मैं हूं और पिता है जिस
ने मुझे भेजा । १७ तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है कि दो
जनों की गवाही ठीक होती है । १८ एक तो मैं आप अपनी
गवाही देता हूं और दूसरा मेरी गवाही पिता देता है जिस
ने मुझे भेजा । १९ तब उन्हों ने उस से कहा तेरा पिता
कहां है । यीशु ने उत्तर दिया कि न तुम मुझे जानते हो न
मेरे पिता को यदि मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते ।
२० ये बातें उस ने मन्दिर में उपदेश करते हुए भण्डार घर
में कहीं और किसी ने उसे न पकड़ा क्योंकि उस का समय
अब तक न आया था ॥

२१ उस ने उन से फिर कहा मैं जाता हूं और तुम
मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पाप में मरोगे । जहां मैं जाता हूं वहां
तुम नहीं आ सकते । २२ इस पर यहूदियों ने कहा क्या वह
अपने आप को मार डालेगा जो कहता है कि जहां मैं जाता
हूं वहां तुम नहीं आ सकते । २३ उस ने उन से कहा तुम
नीचे के हो मैं ऊपर का हूं तुम संसार के हो मैं संसार का

नहीं। २४ इस लिये मैं ने तुम से कहा कि तुम अपने पापों
में मरोगे क्योंकि यदि तुम बिश्वास न करोगे कि मैं वही हूं
तो अपने पापों में मरोगे। २५ उन्हों ने उस से कहा तू कौन
है। यीशु ने उन से कहा वही हूं जो तुम से कहता आया
हूं। २६ तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और फैसला
करना है पर मेरा भेजनेवाला सच्चा है और जो मैं ने उस से
सुना है वही जगत से कहता हूं। २७ वे न समझे कि हम
से पिता के विषय में कहता है। २८ सो यीशु ने कहा जब
तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे तो जानोगे कि मैं
वही हूं और आप से कुछ नहीं करता पर जैसे मेरे पिता ने
मुझे सिखाया वैसे ही ये बातें कहता हूं। २९ और मेरा
भेजनेवाला मेरे साथ है उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा
क्योंकि मैं सदा वही करता हूं जिस से वह प्रसन्न होता है।
३० वह ये बातें कह ही रहा था कि बहुतेरों ने उस पर
बिश्वास किया॥

३१ सो यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उस की
प्रतीति की थी कहा यदि तुम मेरे बचन में बने रहोगे तो
सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। ३२ और सत्य को जानोगे और
सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। ३३ उन्हों ने उस को उत्तर दिया
कि हम तो इब्राहीम के बंश से हैं और कभी किसी के दास
नहीं हुए फिर तू क्योंकर कहता है कि तुम स्वतन्त्र हो
जाओगे। ३४ यीशु ने उन को उत्तर दिया मैं तुम से सच

सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है वह पाप का
दास है । ३५ और दास सदा घर में नहीं रहता पुत्र
सदा रहता है । ३६ सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र करेगा तो
सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे । ३७ मैं जानता हूं कि तुम
इब्राहीम के बंश से हो पर मेरा बचन तुम में नहीं समाता
इस लिये तुम मुझे मार डालना चाहते हो । ३८ मैं वही
कहता हूं जो अपने पिता के यहां देखा है और तुम वही
करते रहते हो जो अपने पिता से सुना है । ३९ उन्हों ने
उस को उत्तर दिया कि हमारा पिता तो इब्राहीम है । यीशु
ने उन से कहा यदि तुम इब्राहीम के सन्तान होते तो इब्रा-
हीम के से काम करते । ४० पर अब तुम मुझ ऐसे मनुष्य
को मार डालना चाहते हो जिस ने तुम्हें वह सत्य बचन
बताया जो परमेश्वर से सुना यह तो इब्राहीम ने न किया
था । ४१ तुम अपने पिता के से काम करते हो । उन्हों ने
उस से कहा हम व्यभिचार से नहीं जन्मे हमारा एक पिता
परमेश्वर है । ४२ यीशु ने उन से कहा यदि परमेश्वर तुम्हारा
पिता होता तो तुम मुझ से प्रेम रखते क्योंकि मैं परमेश्वर
से निकल कर आया हूं मैं आप से नहीं आया पर उसी ने
मुझे भेजा । तुम मेरी बातें क्यों नहीं समझते । ४३ इस लिये
कि मेरा बचन सुन नहीं सकते । ४४ तुम अपने पिता शैतान
से हो और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते
हो । वह तो आरम्भ से खूनी है और सत्य पर स्थिर न रहा

क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं । जब वह झूठ बोलता तो
अपने स्वभाव ही से बोलता है क्योंकि वह झूठा और झूठ
का पिता है । ४५ पर मैं जो सच बोलता हूं इसी लिये तुम
मेरी प्रतीति नहीं करते । ४६ तुम में से कौन मुझे पापी
ठहराता है और यदि मैं सच बोलता हूं तो तुम मेरी प्रतीति
क्यों नहीं करते । ४७ जो परमेश्वर से होता है वह परमेश्वर
की बातें सुनता है और तुम इस लिये नहीं सुनते कि परमे-
श्वर की ओर से नहीं हो । ४८ यह सुन यहूदियों ने उस से
कहा क्या हम ठीक नहीं कहते कि तू सामरी है और तुझ
में दुष्टात्मा है । ४९ यीशु ने उत्तर दिया कि मुझ में दुष्टात्मा
नहीं पर मैं अपने पिता का आदर करता हूं और तुम मेरा
निरादर करते हो । ५० पर मैं अपनी बड़ाई नहीं चाहता
एक तो है जो चाहता और फैसला करता है । ५१ मैं तुम
से सच सच कहता हूं यदि कोई मेरी बात को मानेगा तो
वह कभी मृत्यु को न देखेगा । ५२ यहूदियों ने उस से कहा
अब हम ने जान लिया कि तुझ में दुष्टात्मा है इब्राहीम
मर गया और नबी भी मर गए हैं और तू कहता है कि यदि
कोई मेरी बात को मानेगा तो वह कभी मृत्यु का स्वाद न
चखेगा । ५३ क्या तू हमारे पिता इब्राहीम से बड़ा है जो
मर गया और नबी भी मर गए तू अपने आप को क्या ठह-
राता है । ५४ यीशु ने उत्तर दिया यदि मैं आप अपनी
महिमा करूं तो मेरी महिमा कुछ नहीं मेरी महिमा करने

वाला मेरा पिता है जिसे तुम कहते हो कि वह हमारा परमे-
श्वर है। ५५ और तुम ने तो उसे नहीं जाना पर मैं उसे
जानता हूँ और यदि कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं
तुम्हारी नाईं झूठा ठहरूंगा पर मैं उसे जानता और उस के
बचन को मानता हूं। ५६ तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन
देखने की आशा से बहुत मगन था और उस ने देखा और
आनन्द किया। ५७ यहूदियों ने उस से कहा अब तक तू
पचास बरस का नहीं फिर भी तू ने इब्राहीम को देखा है।
५८ यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं कि
इब्राहीम के होने से पहिले मैं हूं। ५९ तब उन्हों ने उसे मारने
को पत्थर उठाए पर यीशु छिप कर मन्दिर से निकल गया॥

९ जाते हुए उस ने एक मनुष्य को देखा जो जन्म
१. का अंधा था। २ और उस के चेलों ने उस से
पूछा हे रब्बी किस ने पाप किया कि यह अंधा जन्मा इस
मनुष्य ने या उस के माता पिता ने। ३ यीशु ने उत्तर दिया
कि न तो इस ने न इस के माता पिता ने पर यह इस लिये
हुआ कि परमेश्वर के काम उस में प्रगट हों। ४ जिस ने मुझे
भेजा है हमें उस के काम दिन ही दिन में करना अवश्य है वह
रात आनेवाली है जिस में कोई काम नहीं कर सकता। ५
जब तक मैं जगत में हूं तब तक जगत की ज्योति हूं। ६
यह कह कर उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी
सानी और वह मिट्टी उस की आंखों पर लगाकर, ७ उस से

कहा जाकर शीलोह् के कुण्ड में धो ले (जिस का अर्थ
भेजा हुआ है) सो उस ने जाकर धोया और देखते हुए
आया। ८ तब पड़ोसी और जिन्हों ने पहिले उसे भीख
मांगते देखा था कहने लगे क्या यह वही नहीं जो बैठा भीख
मांगा करता था। ९ कितनों ने कहा यह वही है औरों ने
कहा नहीं पर उस के समान है उस ने कहा मैं वही हूं।
१० तब वे उस से पूछने लगे तेरी आंखें क्योंकर खुल गईं।
११ उस ने उत्तर दिया कि यीशु नाम एक मनुष्य ने मिट्टी
सानी और मेरी आंखों पर लगाकर मुझ से कहा शीलोह में
जाकर धो ले सो मैं गया और धोकर देखने लगा। उन्हों ने
उस से पूछा वह कहां है। १२ उस ने कहा मैं नहीं जानता॥
१३ लोग उसे जो पहिले अंधा था फरीसियों के पास
ले गए। १४ जिस दिन यीशु ने मिट्टी सान कर उस की
आंखें खोली थीं वह बिश्राम का दिन था। १५ फिर फरी
सियों ने भी उस से पूछा तेरी आंखें किस रीति से खुलीं।
उस ने उन से कहा उस ने मेरी आंखों पर मिट्टी लगाई
फिर मैंने धो लिया और अब देखता हूं। १६ इस पर कई
फरीसी कहने लगे यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं
क्योंकि वह बिश्राम का दिन नहीं मानता। औरों ने कहा
पापी मनुष्य क्योंकर ऐसे चिन्ह दिखा सकता है। सो उन में
फूट पड़ी। १७ उन्हों ने उस अंधे से फिर कहा उस ने जो
तेरी आंखें खोलीं तो तू उस के बिषय में क्या कहता है।

उस ने कहा वह नबी है । १८ पर यहूदियों को प्रतीति न
आई कि यह अंधा था और अब देखता है जब तक उन्हों ने
उस के माता पिता को जिस की आंखें खुल गई बुलाकर,
१९ उन से न पूछा कि क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम
कहते हो कि अंधा जन्मा था । फिर अब वह क्योंकर देखता
है । २० उस के माता पिता ने उत्तर दिया हम तो जानते
हैं कि यह हमारा पुत्र है और अंधा जन्मा था । २१ पर
हम नहीं जानते कि अब क्योंकर देखता है और न यह
जानते हैं कि किस ने उस की आंखें खोलीं वह सयाना है
उसी से पूछ लो वह अपने विषय में आप कह देगा । २२
ये बातें उस के माता पिता ने इस लिये कहीं कि वे यहूदियों
से डरते थे क्योंकि यहूदी एका कर चुके थे कि यदि कोई
कहे कि वह मसीह है तो सभा से निकाला जाए । २३
इसी कारण उस के माता पिता ने कहा वह सयाना है उसी
से पूछ लो । २४ तब उन्हों ने उस मनुष्य को जो अंधा
था दूसरी बार बुलाकर उस से कहा परमेश्वर की महिमा
कर हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है । २५ उस ने
उत्तर दिया मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं मैं एक
बात जानता हूँ कि मैं अंधा था और अब देखता हूं । २६
उन्हों ने उस से फिर कहा कि उस ने तेरे साथ क्या किया
और किस तरह तेरी आंखें खोलीं । २७ उस ने उन से कहा
मैं तो तुम से कह चुका और तुम ने न सुना अब दूसरी

बार क्यों सुनना चाहते हो क्या तुम भी उस के चेले होना
चाहते हो। २८ तब वे उसे बुरा भला कहकर बोले तू ही
उस का चेला है हम तो मूसा के चेले हैं। २९ हम जानते
हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं पर इस मनुष्य को
नहीं जानते कि कहां का है। ३० उस ने उन को उत्तर
दिया यह तो अचम्भे की बात है कि तुम नहीं जानते कि
कहां का है तौभी उस ने मेरी आंखें खोल दीं। ३१ हम
जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता पर यदि
कोई परमेश्वर का भक्त होता और उस की इच्छा पर चलता
है तो वह उस की सुनता है। ३२ यह कभी सुनने में नहीं
आया कि किसी ने जन्म के अंधे की आंखें खोली हों। ३३
यदि यह जन परमेश्वर की ओर से न होता तो कुछ न कर
सकता। ३४ उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि तू तो बिल-
कुल पापों में जन्मा है तू क्या हमें सिखाता है और उन्हों ने
उसे बाहर निकाल दिया॥

३५ यीशु ने सुना कि उन्हों ने उसे बाहर निकाल
दिया है और जब उस से भेंट हुई तो कहा कि क्या तू
परमेश्वर के पुत्र पर बिश्वास करता है। ३६ उस ने उत्तर
दिया कि हे प्रभु वह कौन है कि मैं उस पर बिश्वास करूं।
३७ यीशु ने उस से कहा तू ने उसे देखा भी है और जो
तेरे साथ बातें करता है वही है। ३८ उस ने कहा हे प्रभु
मैं बिश्वास करता हूं और उसे प्रणाम किया। ३९ तब यीशु

ने कहा मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूं कि जो
नहीं देखते वे देखें और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएं। ४०
जो फरीसी उस के साथ थे उन्हों ने ये बातें सुन कर उस
से कहा क्या हम भी अंधे हैं। ४१ यीशु ने उन से कहा
यदि तुम अंधे होते तो तुम्हें पाप न होता पर अब कहते
हो कि हम देखते हैं इस लिये तुम्हारा पाप बना रहता है॥

१० मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो द्वार
से भेड़शाला में नहीं आता पर और किसी
ओर से चढ़ जाता है वह चोर और डाकू है। २ पर जो
द्वार से भीतर आता है वह भेड़ों का रखवाला है। ३ उस
के लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है और भेड़ें उस का शब्द
सुनती हैं और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता
है और बाहर ले जाता है। ४ और जब वह अपनी सब
भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है तो उन के आगे आगे
चलता है और भेड़ें उस के पीछे पीछे हो लेती हैं क्योंकि
वे उस का शब्द पहचानती हैं। ५ पर वे पराये के पीछे
नहीं जाएंगी पर उस से भागेंगी क्योंकि वे परायों का शब्द
नहीं पहचानतीं। ६ यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा पर वे
न समझे कि ये क्या बातें हैं जो वह हम से कहता है॥

७ सो यीशु ने उन से फिर कहा मैं तुम से सच सच
कहता हूं कि भेड़ों का द्वार मैं हूं। ८ जितने मुझ से पहिले
आए वे सब चोर और डाकू हैं पर भेड़ों ने उन की न सुनी।

९ द्वार मैं हूं यदि कोई मेरे द्वारा भीतर जाए तो उद्धार
पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा
पाएगा । १० चोर किसी और काम को नहीं केवल चोरी और
घात और नाश करने को आता है । मैं इस लिये आया कि
वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं । ११ अच्छा रखवाला
मैं हूं अच्छा रखवाला भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है ।
१२ मजदूर जो न रखवाला है और न भेड़ों का मालिक है
भेड़िए को आते देख भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है और
भेड़िया उन्हें पकड़ता और तित्तर बित्तर कर देता है । १३
यह इस लिये होता है कि वह मजदूर है और उस को भेड़ों
की चिन्ता नहीं । १४ अच्छा रखवाला मैं हूं जिस तरह पिता
मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूं, १५ इसी तरह
मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं
और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं । १६ और मेरी
और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़शाला की नहीं मुझे उन का भी
लाना अवश्य है वे मेरा शब्द सुनेंगी तब एक ही झुण्ड और
एक ही रखवाला होगा । १७ पिता इस लिये मुझ से प्रेम
रखता है कि मैं अपना प्राण देता हूं कि उसे फिर लेऊं । १८
कोई उस को मुझ से छीनता नहीं बरन मैं उसे आप ही
देता हूं मुझे उस के देने का भी अधिकार है और उस के
फिर लेने का भी अधिकार है । यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे
मिली ॥

१९ इन बातों के कारण यहूदियों में फिर फूट पड़ी।
२० उन में से बहुतेरे कहने लगे कि उस में दुष्टात्मा है
और वह पागल है उस की क्यों सुनते हो। २१ औरों ने
कहा ये बातें ऐसे मनुष्य की नहीं जिस में दुष्टात्मा हो क्या
दुष्टात्मा अंधों की आंखें खोल सकता है॥

२२ यरूशलेम में स्थापन पर्व हुआ और जाड़े का समय
था। २३ और यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में फिर
रहा था। २४ तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा तू
हमारे मन को कब तक दुबधा में रखेगा यदि तू मसीह है
तो हम से साफ साफ कह दे। २५ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया
कि मैं ने तुम से कह दिया और तुम प्रतीति नहीं करते जो
काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे गवाह
हैं। २६ पर तुम इस लिये प्रतीति नहीं करते कि मेरी भेड़ों
में से नहीं हो। २७ मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं
उन्हें जानता हूं और वे मेरे पीछे हो लेती हैं। २८ और मैं
उन्हें अनन्त जीवन देता हूं और वे कभी नाश न होंगी
और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। २९ मेरा पिता
जिस ने उन्हें मुझ को दिया है सब से बड़ा है और कोई
पिता के हाथ से उन्हें छीन नहीं सकता। ३० मैं और पिता
एक हैं। ३१ यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने को फिर पत्थर
उठाए। ३२ इस पर यीशु ने उन से कहा कि मैं ने तुम्हें
अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं उन

में से किस काम के लिये मुझे पत्थरवाह करते हो। ३३
यहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि भले काम के लिये हम
तुझे पत्थरवाह नहीं करते परन्तु परमेश्वर की निन्दा के लिये
और इस लिये कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर
बनाता है। ३४ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम्हारी व्यव-
स्था में नहीं लिखा है कि मैं ने कहा तुम ईश्वर हो। ३५
यदि उस ने उन्हें ईश्वर कहा जिन के पास परमेश्वर का वचन
पहुँचा और पवित्र शास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती, ३६
तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है क्या तुम
उस से कहते हो कि तू निन्दा करता है इस लिये कि मैं ने
कहा मैं परमेश्वर का पुत्र हूं। ३७ यदि मैं अपने पिता के
काम नहीं करता तो मेरी प्रतीति न करो। ३८ पर जो मैं
करता हूं तो यदि मेरी प्रतीति न करो तौभी उन कामों की
प्रतीति करो कि तुम जानो और समझो कि पिता मुझ में
है और मैं पिता में हूं। ३९ तब उन्हों ने फिर उसे पकड़ना
चाहा पर वह उन के हाथ से निकल गया॥

४० वह फिर यरदन के पार उस जगह चला गया जहां
यूहन्ना पहले बपतिसमा देता था और वहीं रहा। ४१ और
बहुतेरे उस के पास आकर कहते थे कि यूहन्ना ने तो कोई
चिन्ह नहीं दिखाया पर जो कुछ यूहन्ना ने इस के विषय में
कहा था वह सब सच था। ४२ और वहां बहुतेरों ने उस
पर बिश्वास किया॥

११ मरयम और उस की बहिन मरथा के गांव
बैतनिय्याह का लाजर नाम एक मनुष्य
बीमार था । २ यह वही मरयम थी जिस ने प्रभु पर अतर
डालकर उस के पांवों को अपने बालों से पोंछा इसी का
भाई लाजर बीमार था । ३ सो उस की बहिनों ने उसे
कहला भेजा कि हे प्रभु देख जिस से तू प्रीति रखता है वह
बीमार है । ४ यह सुनकर यीशु ने कहा यह बीमारी मृत्यु
की नहीं परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है कि उस के
द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो । ५ और यीशु मरथा
और उस की बहिन और लाजर से प्रेम रखता था । ६ सो
जब उस ने सुना कि वह बीमार है तो जिस जगह था वहां
दो दिन और रहा । ७ तब इस के पीछे उस ने चेलों से
कहा कि आओ हम फिर यहूदिया को चलें । ८ चेलों ने
उससे कहा हे रब्बी अभी तो यहूदी तुझे पत्थरवाह करना
चाहते थे और क्या तू फिर भी वहीं जाता है । ९ यीशु ने
उत्तर दिया क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते यदि कोई दिन
को चले तो ठोकर नहीं खाता क्योंकि इस जगत का उजाला
देखता है । १० पर यदि कोई रात को चले तो ठोकर खाता
है क्योंकि उस में उजाला नहीं । ११ उस ने ये बातें कहीं
और इस के पीछे उन से कहने लगा कि हमारा मित्र लाजर
सो गया है पर मैं उसे जगाने जाता हूं । १२ सो चेलों ने
उस से कहा हे प्रभु यदि वह सो गया है तो बच जायगा ।

१३ यीशु ने तो उस की मृत्यु के विषय में कहा था पर वे
समझे कि उस ने नींद से सो जाने के विषय में कहा । १४
तब यीशु ने उन से साफ साफ कह दिया कि लाजर मर
गया । १५ और तुम्हारे कारण आनन्दित हूं कि मैं वहां न
था जिस से तुम बिश्वास करो पर अब आओ हम उस के
पास चलें । १६ तब तोमा ने जो दिदुमुस कहलाता है
अपने साथ के चेलों से कहा आओ हम भी उस के साथ
मरने को चलें ॥

१७ सो यीशु ने आकर जाना कि उसे कबर में रक्खे
चार दिन हो चुके हैं । १८ बैतनिय्याह यरूशलेम से कोई
कोस एक दूर था । १९ और बहुत से यहूदी मरथा और
मरयम के पास उन के भाई के विषय में शान्ति देने आये
थे । २० सो मरथा यीशु के आने का समाचार सुन कर
उस से भेंट करने को गई पर मरयम घर में बैठी रही । २१
मरथा ने यीशु से कहा हे प्रभु यदि तू यहां होता तो मेरा
भाई न मरता । २२ और अब भी मैं जानती हूं कि जो
कुछ तू परमेश्वर से मांगे परमेश्वर तुझे देगा । २३ यीशु ने
उस से कहा तेरा भाई जी उठेगा । २४ मरथा ने उस से
कहा मैं जानती हूं कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय
वह भी जी उठेगा । २५ यीशु ने उस से कहा पुनरुत्थान
और जीवन मैं ही हूं जो मुझ पर बिश्वास करे वह यदि
मर भी जाय तौभी जीएगा । २६ और जो कोई जीवता

और मुझ पर बिश्वास करता है वह कभी न मरेगा क्या तू
इस बात पर बिश्वास करती है । २७ उस ने उस से कहा
हां हे प्रभु मैं बिश्वास कर चुकी हूं कि परमेश्वर का पुत्र
मसीह जो जगत में आनेवाला था वह तू ही है । २८ यह
कह कर वह चली गई और अपनी बहिन मरयम को चुपके
से बुलाकर कहा गुरु यहीं है और तुझे बुलाता है । २९ वह
सुनते ही तुरन्त उठकर उस के पास आई । ३० यीशु अभी
गांव में नहीं पहुँचा था पर उसी स्थान में था जहां मरथा
ने उस से भेंट की थी । ३१ सो जो यहूदी उस के साथ
घर में थे और उसे शान्ति दे रहे थे यह देखकर कि मरयम
तुरन्त उठ के बाहर गई यह समझ कर कि वह कबर पर
रोने को जाती है उस के पीछे हो लिये । ३२ जब मरयम
वहां पहुँची जहां यीशु था तो उसे देखते ही उस के पांवों
पड़के कहा हे प्रभु यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न
मरता । ३३ जब यीशु ने उस को और उन यहूदियों को
जो उस के साथ आए थे रोते हुए देखा तो आत्मा में बहुत
ही उदास हुआ और घबरा कर कहा, तुम ने उसे कहां
रक्खा है । ३४ उन्हों ने उस से कहा हे प्रभु चलकर देख
ले । ३५ यीशु के आंसू बहने लगे । ३६ तब यहूदी कहने
लगे देखो वह उस से कैसी प्रीति रखता था । ३७ पर उन
में से कितनों ने कहा क्या यह जिस ने अंधे की आंखें
खोलीं यह भी न कर सका कि यह मनुष्य न मरता ।

३८ यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कबर पर
आया वह गुफा थी और एक पत्थर उस पर धरा था।
३९ यीशु ने कहा पत्थर को उठाओ। उस मरे हुए की
बहिन मरथा उस से कहने लगी हे प्रभु वह तो अब बस्साता
है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए। ४० यीशु ने उस से
कहा क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि यदि तू बिश्वास
करेगी तो परमेश्वर की महिमा देखेगी। ४१ तब उन्हों ने
उस पत्थर को हटाया और यीशु ने आंखें उठाकर कहा हे
पिता मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली
है। ४२ और मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है पर
जो भीड़ आस पास खड़ी है उस के कारण मैं ने यह कहा
इस लिये कि वे बिश्वास करें कि तू ने मुझे भेजा। ४३ यह
कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा कि हे लाजर निकल
आ। ४४ जो मर गया था वह कफन से हाथ पांव बांधे
हुए निकल आया और उस का मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ
था। यीशु ने उन से कहा उसे खोलो और जाने दो॥

४५ तब जो यहूदी मरयम के यहां आए थे और उस
का यह काम देखा था उन में से बहुतों ने उस पर बिश्वास
किया। ४६ पर उन में से कितनों ने फरीसियों के पास
जाकर यीशु के कामों का समाचार दिया॥

४७ इस पर महायाजकों और फरीसियों ने सभा इकट्ठी
करके कहा हम करते क्या हैं यह मनुष्य तो बहुत चिन्ह

दिखाता है। ४८ यदि हम उसे योंही छोड़ दें तो सब उस
पर विश्वास कर लेंगे और रोमी आकर हमारी जगह और
जाति को भी छीन लेंगे। ४९ तब उन में से काइफा नाम
एक जन ने जो उस बरस का महायाजक था उनसे कहा
तुम कुछ नहीं जानते, ५० और न यह सोचते हो कि तुम्हारे
लिये भला है कि हमारे लोगों के लिये एक मनुष्य मरे
और न यह कि सारी जाति नाश हो। ५१ यह बात उस
ने अपनी ओर से न कही पर उस बरस का महायाजक
होकर नबूवत की कि यीशु उस जाति के लिये मरेगा,
५२ और न केवल उस जाति के लिये बरन इस लिये भी
कि परमेश्वर के तित्तर बित्तर सन्तानों को एक कर दे।
५३ सो उसी दिन से वे उस के मार डालने की सम्मति
करने लगे॥

५४ इस लिये यीशु उस समय से यहूदियों में प्रगट
होकर न फिरा पर वहां से जंगल के निकट के देश में
इफ्राईम नाम एक नगर को चला गया और अपने चेलों
के साथ वहीं रहने लगा। ५५ यहूदियों का फसह निकट
था और बहुतेरे लोग फसह से पहिले दिहात से यरूशलेम
को गए कि अपने आप को शुद्ध करें। ५६ सो वे यीशु
को ढूंढने और मन्दिर में खड़े होकर आपस में कहने लगे
तुम क्या समझते हो क्या वह पर्व्व में नहीं आएगा।
५७ और महायाजकों और फरीसियों ने भी आज्ञा दे रक्खी

था कि यदि कोई यह जाने कि यीशु कहां है तो बताए इस
लिये कि उसे पकड़ लें ॥

१२ फिर यीशु फसह से छः दिन पहिले बैत-
निय्याह में आया जहां लाजर था जिसे
यीशु ने मरे हुओं में से जिलाया था। २ वहां उन्हों ने
उस के लिये बियारी बनाई और मरथा सेवा कर रही थी
और लाजर उन में से एक था जो उस के साथ खाने को
बैठे थे। ३ तब मरयम ने जटामासी का आध सेर बहुमोल
खरा अतर लेकर यीशु के पावों पर डाला और अपने बालों
से उस के पांव पोंछे और अतर की गंध से घर सुगन्धित
हो गया। ४ पर उस के चेलों में से यहूदा इस्करियोती
नाम एक चेला जो उसे पकड़वाने पर था कहने लगा।
५ यह अतर तीन सौ दीनार में बेचकर कंगालों को क्यों
न दिया गया। ६ उस ने यह बात इस लिये न कही कि
उसे कंगालों की चिन्ता थी पर इस लिये कि वह चोर था
और उस के पास उन की थैली रहती थी और उस में जो
कुछ डाला जाता था सो निकाल लेता था। ७ यीशु ने
कहा उसे मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये रखने दे।
८ कंगाल तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं पर मैं तुम्हारे साथ
सदा न रहूंगा ॥

९ यहूदियों में से साधारण लोग जान गए कि वह
वहां है और वे न केवल यीशु के कारण आए पर इस लिये

थी कि लाजर को देखें जिसे उस ने मरे हुओं में से
जिलाया था । १० तब महायाजकों ने लाजर को भी मार
डालने की सम्मति की । ११ क्योंकि उस के कारण बहुत
से यहूदी चले गए और यीशु पर विश्वास किया ॥
१२ दूसरे दिन बहुत से लोगों ने जो पर्ब्ब में आए
थे यह सुनकर कि यीशु यरूशलेम में आता है । १३ खजूर
की डालियां लीं और उस से भेंट करने को निकले और
पुकारने लगे कि होशाना धन्य इस्राईल का राजा जो प्रभु
के नाम से आता है । १४ जब यीशु को एक गदहे का
बच्चा मिला तो उस पर बैठा । १५ जैसा लिखा है कि हे
सिय्योन की बेटी मत डर देख तेरा राजा गदहे के बच्चे
पर चढ़ा हुआ चला आता है । १६ उस के चेले ये बातें
पहिले न समझे थे पर जब यीशु की महिमा प्रगट हुई तो
उन को स्मरण आया कि ये बातें उस के विषय में लिखी
हुई थीं और लोगों ने उस से ऐसा बरताव किया था ।
१७ सो भीड़ के लोगों ने गवाही दी जो उस समय उस के
साथ थे जब उस ने लाजर को कबर में से बुलाकर मरे
हुओं में से जिलाया था । १८ इसी कारण लोग उस से
भेंट करने को आए कि उन्हों ने सुना था कि उस ने यह
चिन्ह दिखाया था । १९ सो फरीसियों ने आपस में कहा
सोचो तो कि तुम से कुछ नहीं बनता देखो संसार उस के
पीछे हो चला है ॥

२० जो लोग पर्ब्ब में भजन करने आए थे उन में से
कई यूनानी थे। २१ सो उन्हों ने गलील के बैतसैदा के
रहनेवाले फ़िलिप्पुस के पास आकर उस से बिनती की कि
हे साहिब हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं। २२ फ़िलिप्पुस
ने आकर अन्द्रियास से कहा तब अन्द्रियास और फ़िलिप्पुस
ने यीशु से कहा। २३ इस पर यीशु ने उन से कहा वह
समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो।
२४ मैं तुम से सच सच कहता हूं जब तक गेहूं का दाना
भूमि में पड़कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता है पर
जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है। २५ जो अपने
प्राण को प्रिय जानता है वह उसे खो देता है और जो इस
जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है वह अनन्त जीवन
के लिये उस की रक्षा करेगा। २६ यदि कोई मेरी सेवा
करे तो मेरे पीछे हो ले और जहां मैं हूं वहां मेरा सेवक
भी होगा यदि कोई मेरी सेवा करे तो पिता उस का आदर
करेगा। २७ अब मेरा जी घबराता है और मैं क्या कहूं।
हे पिता मुझे इस घड़ी से बचा। पर मैं इसी कारण इस
घड़ी को पहुँचा हूं। २८ हे पिता अपने नाम की महिमा
कर। तब यह आकाशवाणी हुई कि मैं ने उस की महिमा
की है और फिर भी करूंगा। २९ तब जो लोग खड़े हुए
सुन रहे थे उन्हों ने कहा कि बादल गरजा औरों ने कहा
कोई स्वर्गदूत उस से बोला। ३० इस पर यीशु ने कहा

यह शब्द मेरे लिये नहीं पर तुम्हारे लिये आया है। ३१ अब
इस जगत का न्याय होता है अब इस जगत का सरदार
निकाल दिया जायगा। ३२ और मैं यदि पृथिवी से ऊंचे
पर चढ़ाया जाऊंगा तो सब को अपने पास खींचूंगा।
३३ यह कहने में उस ने यह पता दिया कि वह कैसी मृत्यु
से मरने को था। ३४ इस पर लोगों ने उस से कहा कि
हम ने व्यवस्था की यह बात सुनी है कि मसीह सदा लों
रहेगा फिर तू क्योंकर कहता है कि मनुष्य के पुत्र को ऊंचे
पर चढ़ाया जाना अवश्य है। यह मनुष्य का पुत्र कौन है।
३५ यीशु ने उन से कहा ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे
बीच है। जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले
चलो न हो कि अंधकार तुम्हें आ घेरे। जो अंधकार में
चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता है। ३६ जब
तक ज्योति तुम्हारे साथ है ज्योति पर बिश्वास करो कि
तुम ज्योति के सन्तान होओ॥

ये बातें कहकर यीशु चला गया और उन से छिपा
रहा। ३७ और उस ने उन के सामने इतने चिन्ह दिखाए
तौभी उन्हों ने उस पर बिश्वास न किया। ३८ कि यशा-
याह नबी का बचन पूरा हो जो उस ने कहा कि हे प्रभु
हमारे समाचार की किस ने प्रतीति की है और प्रभु का
भुजबल किस पर प्रगट हुआ। ३९ इस कारण वे बिश्वास
न कर सके क्योंकि यशायाह ने फिर कहा। ४० उस ने

उन की आंखें अंधी और उन का मन कठोर किया है ऐसा
न हो कि वे आंखों से देखें और मन से समझें और फिरें
और मैं उन्हें चंगा करूं। ४१ यशायाह ने ये बातें तब
जब कहा कि उस की महिमा देखी और उस ने उस के
विषय में बातें कीं। ४२ तौभी सरदारों में से भी बहुतों
ने उस पर विश्वास किया परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट
में न मानते थे ऐसा न हो कि सभा में से निकाले जाएं।
४३ क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा
से अधिक प्रिय लगती थी॥

४४ यीशु ने पुकार कर कहा जो मुझ पर विश्वास
करता है वह मुझ पर नहीं बरन मेरे भेजनेवाले पर विश्वास
करता है। ४५ और जो मुझे देखता है वह मेरे भेजनेवाले
को देखता है। ४६ मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं
कि जो कोई मुझ पर विश्वास करे वह अंधकार में न रहे।
४७ यदि कोई मेरी बातें सुन कर न माने तो मैं उसे दोषी
नहीं ठहराता क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने को नहीं
पर जगत का उद्धार करने को आया हूं। ४८ जो मुझे तुच्छ
जानता और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता उस को दोषी
ठहरानेवाला तो एक है। जो बचन मैं ने कहा है वही
पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा। ४९ क्योंकि मैं ने
अपनी ओर से बातें नहीं कीं परन्तु पिता जिस ने मुझे
भेजा उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूं और क्या

क्या बोलूं । ५० और मैं जानता हूं कि उस की आज्ञा अनन्त
जीवन है इस लिये मैं जो बोलता हूं वह जैसा पिता ने मुझ
से कहा है वैसा ही बोलता हूं ॥

१३. फसह के पर्व्व से पहिले जब यीशु ने जान
लिया कि मेरी वह घड़ी आ पहुँची कि जगत
छोड़कर पिता के पास जाऊं तो अपने लोगों से जो जगत
में थे जैसा प्रेम रखता था अन्त तक प्रेम रखता रहा ।
२ और जब शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के
मन में यह डाल चुका था कि उसे पकड़वाए तो बियारी
के समय, ३ यीशु ने यह जान कर कि पिता ने सब कुछ
मेरे हाथ में कर दिया और मैं परमेश्वर के पास से आया
हूं और परमेश्वर के पास जाता हूं, ४ बियारी से उठ कर
अपने कपड़े उतार दिए और अंगोछा लेकर अपनी कमर
बांधी । ५ तब बरतन में पानी भर कर चेलों के पांव धोने
और जिस अंगोछे से उस की कमर बंधी थी उस से पोंछने
लगा । ६ तब वह शमौन पतरस के पास आया । इस ने
उस से कहा हे प्रभु क्या तू मेरे पांव धोता है । ७ यीशु ने
उस को उत्तर दिया कि जो मैं करता हूं तू अब नहीं
जानता पर इस के पीछे समझेगा । ८ पतरस ने उस से
कहा तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा । यह सुन यीशु ने
उस से कहा यदि मैं तुझे न धोऊं तो मेरे साथ तेरा कुछ
साझा नहीं । ९ शमौन पतरस ने उस से कहा हे प्रभु तो

मेरे पांव ही नहीं बरन हाथ और सिर भी धो दे। १० यीशु
ने उस से कहा जो नहा चुका है उसे पांव के सिवा और
कुछ धोने का प्रयोजन नहीं पर वह बिलकुल शुद्ध है और
तुम शुद्ध हो पर सब के सब नहीं। ११ वह तो अपने
पकड़वाने वाले को जानता था इसी लिये उस ने कहा तुम
सब के सब शुद्ध नहीं॥

१२ जब वह उन के पांव धो चुका और अपने कपड़े
पहिन कर फिर बैठ गया तो उन से कहने लगा क्या तुम
समझे कि मैं ने तुम्हारे साथ क्या किया। १३ तुम मुझे
गुरु और प्रभु कहते हो और भला कहते हो क्योंकि वही
हूं। १४ सो यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पांव
धोए तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए।
१५ क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है कि जैसा मैं ने
तुम्हारे साथ किया है तुम भी किया करो। १६ मैं तुम से
सच सच कहता हूं दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं और न
भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से। १७ तुम जो ये बातें जानते
हो यदि उन पर चलो तो धन्य हो। १८ मैं तुम सब के
विषय में नहीं कहता। जिन्हें मैं ने चुन लिया है उन्हें मैं
जानता हूं। पर यह इस लिये है कि पवित्र शास्त्र का यह
बचन पूरा हो कि जो मेरी रोटी खाता है उस ने मुझ पर
लात उठाई। १९ अब मैं उस के होने से पहिले तुम्हें जताए
देता हूं कि जब हो जाए तो तुम बिश्वास करो कि मैं वही

हूं । २० मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो मेरे भेजे हुए
को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे
ग्रहण करता है वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है ॥
२१ ये बातें कह कर यीशु आत्मा में घबराया और
यह गवाही दी कि मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम
में से एक मुझे पकड़वाएगा । २२ चेले यह संदेह करते
हुए कि वह किस के विषय में कहता है एक दूसरे की ओर
देखने लगे । २३ उस के चेलों में से एक जिस से यीशु प्रेम
रखता था यीशु की छाती की ओर झुका हुआ बैठा था ।
२४ सो शमौन पतरस ने उस की ओर सैन करके पूछा कि
बता तो वह किस के विषय में कहता है । २५ तब उस ने
उसी तरह यीशु की छाती की ओर झुक कर पूछा हे प्रभु
वह कौन है । २६ यीशु ने उत्तर दिया जिसे मैं यह रोटी
का टुकड़ा डुबोकर दूंगा वही है । और उस ने टुकड़ा डुबो-
कर शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती को दिया । २७ और
टुकड़ा लेते ही शैतान उस में समा गया। तब यीशु ने उस से
कहा जो तू करता है तुरन्त कर । २८ पर बैठनेवालों में से
किसी ने न जाना कि उस ने यह बात उस से किस लिये कही ।
२९ यहूदा के पास थैली रहती थी इस लिये किसी किसी ने
समझा कि यीशु उस से कहता है कि जो कुछ हमें पर्व्व के
लिये चाहिये वह मोल ले या यह कि कंगालों को कुछ दे। ३०
सो वह टुकड़ा लेकर तुरन्त बाहर चला गया और रात थी ॥

३१ जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा अब
मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई और परमेश्वर की महिमा
उस में हुई । ३२ और परमेश्वर भी अपने में उस की
महिमा करेगा बरन तुरन्त करेगा । ३३ हे बालको मैं और
थोड़ी देर तुम्हारे पास हूं । तुम मुझे ढूंढ़ोगे और जैसा मैं ने
यहूदियों से कहा कि जहां मैं जाता हूं वहां तुम नहीं आ
सकते वैसा ही मैं अब तुम से भी कहता हूं । ३४ मैं तुम्हें
एक नई आज्ञा देता हूं कि एक दूसरे से प्रेम रक्खो ।
जैसा मैं ने तुम से प्रेम रक्खा है वैसा ही तुम भी एक दूसरे
से प्रेम रक्खो । ३५ यदि आपस में प्रेम रक्खोगे तो इसी
से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो ॥

३६ शमौन पतरस ने उस से कहा हे प्रभु तू कहां जाता
है । यीशु ने उत्तर दिया कि जहां मैं जाता हूं वहां तू अब
मेरे पीछे आ नहीं सकता पर इस के बाद मेरे पीछे आएगा ।
३७ पतरस ने उस से कहा हे प्रभु अभी मैं तेरे पीछे क्यों
नहीं आ सकता मैं तो तेरे लिये अपना प्राण दूंगा । ३८
यीशु ने उत्तर दिया क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा । मैं
तुझ से सच सच कहता हूं कि मुर्ग बांग न देगा जब तक
तू तीन बार मुझ से न मुकरेगा ॥

१४. तुम्हारा न मन घबराए परमेश्वर पर बिश्वास
रखते हो मुझ पर भी बिश्वास रक्खो ।
२ मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं यदि न

होते तो मैं तुम से कह देता। मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार
करने जाता हूं। ३ यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार
करूं तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां
मैं रहूं वहां तुम भी रहो। ४ और जहां मैं जाता हूं तुम
वहां का मार्ग जानते हो। ५ तोमा ने उस से कहा हे प्रभु
हम नहीं जानते तू कहां जाता है तो मार्ग कैसे जानें।
६ यीशु ने उस से कहा मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही
हूं बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँचता।
७ यदि तुम ने मुझे जाना होता तो मेरे पिता को भी जानते
अब से उसे जानते हो और उसे देखा भी। ८ फिलिप्पुस
ने उस से कहा हे प्रभु पिता को हमें दिखा दे यही हमारे
लिये बहुत है। ९ यीशु ने उस से कहा हे फिलिप्पुस मैं
इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं और क्या मुझे नहीं जानता।
जिस ने मुझे देखा उस ने पिता को देखा। तू क्योंकर कहता
है कि पिता को हमें दिखा। १० क्या तू प्रतीति नहीं करता
कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है ये बातें जो मैं तुम
से कहता हूं अपनी ओर से नहीं कहता परन्तु पिता मुझ
में रहकर अपने काम करता है। ११ मेरी ही प्रतीति करो
कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है नहीं तो कामों
ही के कारण मेरी प्रतीति करो। १२ मैं तुम से सच सच
कहता हूं कि जो मुझ पर बिश्वास रखता है ये काम जो
मैं करता हूं वह भी करेगा बरन इन से भी बड़े काम करेगा

क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं। १३ और जो कुछ तुम
मेरे नाम से मांगोगे वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता
की महिमा हो। १४ यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ
मांगोगे तो मैं उसे करूंगा। १५ यदि तुम मुझ से प्रेम
रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। १६ और मैं पिता
से बिनती करूंगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा
कि वह सदा तुम्हारे साथ रहे। १७ अर्थात सत्य का आत्मा
जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह न उसे
देखता और न उसे जानता है। तुम उसे जानते हो क्योंकि
वह तुम्हारे साथ रहता है और तुम में होगा। १८ मैं तुम्हें
अनाथ न छोड़ूंगा मैं तुम्हारे पास आता हूं। १९ और
थोड़ी देर है कि संसार मुझे फिर न देखेगा पर तुम मुझे
देखोगे इस लिये कि मैं जीता हूं तुम भी जीते रहोगे।
२० उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूं और
तुम मुझ में और मैं तुम में। २१ जिस के पास मेरी आज्ञा
हैं और वह उन्हें मानता है वही मुझ से प्रेम रखता है और
जो मुझ से प्रेम रखता है उस से मेरा पिता प्रेम रक्खेगा
और मैं उस से प्रेम रक्खूंगा और अपने आप को उस पर
प्रगट करूंगा। २२ उस यहूदा ने जो इस्करियोती न था
उस से कहा हे प्रभु क्या हुआ कि तू अपने आप को हम
पर प्रगट किया चाहता है और संसार पर नहीं। २३ यीशु
ने उस को उत्तर दिया यदि कोई मुझ से प्रेम रक्खे तो वह

मेरे बचन मानेगा और मेरा पिता उस से प्रेम रक्खेगा
और हम उस के पास आएंगे और उस के साथ बास
करेंगे। २४ जो मुझ से प्रेम नहीं रखता वह मेरे बचन
नहीं मानता और जो बचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं
बरन पिता का है जिस ने मुझे भेजा॥

२५ ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं।
२६ पर सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम
से भेजेगा वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैं
ने तुम से कहा है वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। २७ मैं
तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं जैसे
संसार देता है मैं तुम्हें नहीं देता। तुम्हारा मन न घबराए
और न डरे। २८ तुम ने सुना कि मैं ने तुम से कहा कि
मैं जाता हूं और तुम्हारे पास फिर आता हूं। यदि तुम
मुझ से प्रेम रखते तो इस बात से आनन्दित होते कि मैं
पिता के पास जाता हूं क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है।
२९ और मैंने अब इस के होने से पहिले तुम से कह दिया
है कि जब वह हो जाए तो तुम प्रतीति करो। ३० मैं अब
से तुम्हारे साथ और बहुत बातें न करूंगा क्योंकि इस
संसार का सरदार आता है और मुझ में उस का कुछ नहीं।
३१ पर यह इस लिये होता है कि संसार जाने कि मैं पिता
से प्रेम रखता हूं और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी
मैं वैसे ही करता हूं। उठो यहां से चलें॥

सच्ची दाखलता मैं हूं और मेरा पिता किसान
15. है । २ जो डाली मुझ में है और नहीं फलती
उसे वह काट डालता है और जो फलती है उसे वह छांटता
है कि और फले । ३ तुम तो उस बचन के कारण जो मैं ने
तुम से कहा है शुद्ध हो । ४ तुम मुझ में बने रहो और मैं
तुम में । जैसे डाली दाखलता में यदि बनी न रहे तो अपने
आप से नहीं फल सकती वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने
न रहो तो नहीं फल सकते । ५ मैं दाखलता हूं तुम
डालियां हो । जो मुझ में बना रहता है और मैं उस में
वह बहुत फलता है क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ
नहीं कर सकते । ६ यदि कोई मुझ में बना न रहे तो वह
डाली की नाईं फेंक दिया जाता और सूख जाता है और
लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं और वे जल जाती
हैं । ७ यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरी बातें तुम में
बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो
जाएगा । ८ मेरे पिता की महिमा इसी में होती है कि तुम
बहुत सा फल लाओ तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे । ९ जैसा
पिता ने मुझ से प्रेम रक्खा वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रक्खा
मेरे प्रेम में बने रहो । १० यदि तुम मेरी आज्ञाओं को
मानोगे तो मेरे प्रेम में बने रहोगे जैसा कि मैं ने अपने
पिता की आज्ञाओं को माना है और उस के प्रेम में बना
रहता हूं । ११ मैं ने ये बातें तुम से इस लिये कही हैं कि

मेरा आनन्द तुम में रहे और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।
१२ मेरी आज्ञा यह है कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रक्खा
वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रक्खो। १३ इस से
बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिये
अपना प्राण दे। १४ जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं यदि
उसे करो तो मेरे मित्र हो। १५ अब से मैं तुम्हें दास न
कहूंगा क्योंकि दास नहीं जानता कि उस का स्वामी क्या
करता है पर मैं ने तुम्हें मित्र कहा है क्योंकि मैं ने जो बातें
अपने पिता से सुनीं वे सब तुम्हें बता दीं। १६ तुम ने
मुझे नहीं चुना पर मैं ने तुम्हें चुना और तुम्हें ठहराया कि
तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे कि तुम
मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो वह तुम्हें दे। १७ इन
बातों की आज्ञा मैं तुम्हें इस लिये देता हूं कि तुम एक
दूसरे से प्रेम रक्खो। १८ यदि संसार तुम से बैर रखता
है तो तुम जानते हो कि उस ने तुम से पहिले मुझ से
भी बैर रक्खा। १९ यदि तुम संसार के होते तो संसार
अपनों से प्रीति रखता पर इस कारण कि तुम संसार के
नहीं बरन मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसी लिये
संसार तुम से बैर रखता है। २० जो बात मैं ने तुम से
कही थी कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता वह
स्मरण करो। यदि उन्हों ने मुझे सताया तो तुम्हें भी सता-
एंगे यदि उन्हों ने मेरी बात मानी तो तुम्हारी भी मानेंगे।

२१ पर यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ
करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते। २२ यदि
मैं न आता और उन से बातें न करता तो वे पापी न ठह-
रते पर अब उन्हें उन के पाप के लिये कोई बहाना नहीं।
२३ जो मुझ से बैर रखता है वह मेरे पिता से भी बैर
रखता है। २४ यदि मैं उन में वे काम न करता जो और
किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते पर अब तो
उन्हों ने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा और दोनों से
बैर किया। २५ और यह इस लिये हुआ कि वह बचन
पूरा हो जो उन की व्यवस्था में लिखा है कि उन्हों ने
मुझ से अकारण बैर किया। २६ पर जब वह सहायक
आएगा जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा
अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है
तो वह मेरी गवाही देगा। २७ और तुम भी गवाह हो
क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो॥

१६ ये बातें मैं ने तुम से इस लिये कहीं कि
१. तुम ठोकर न खाओ। २ वे तुम्हें सभा में
से निकाल देंगे बरन वह समय आता है कि जो कोई तुम्हें
मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता
हूं। ३ और यह वे इस लिये करेंगे कि उन्हों ने न पिता
को जाना न मुझे। ४ पर ये बातें मैं ने इस लिये तुम से
कहीं कि जब उन का समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए

कि मैं ने तुम से कह दिया था और मैं ने आरम्भ में तुम से
ये बातें इस लिये न कहीं कि मैं तुम्हारे साथ था। ५ अब
मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूं और तुम में से कोई
मुझ से नहीं पूछता कि तू कहां जाता है। ६ पर मैं ने जो ये
बातें तुम से कही हैं इस लिये तुम्हारा मन शोक से भर
गया। ७ तौभी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना
तुम्हारे लिये अच्छा है क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो वह सहा-
यक तुम्हारे पास न आएगा पर यदि मैं जाऊंगा तो उसे
तुम्हारे पास भेज दूंगा। ८ और वह आकर संसार को पाप
और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा। ९
पाप के विषय में इस लिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं
करते। १० धार्मिकता के विषय में इस लिये कि मैं पिता
के पास जाता हूं और तुम मुझे फिर न देखोगे। ११ न्याय
के विषय में इस लिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया
गया है। १२ मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं
पर अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। १३ पर जब वह अर्थात
सत्य का आत्मा आएगा तो तुम्हें सारे सत्य का मार्ग बता-
एगा क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा पर जो कुछ सुनेगा
वही कहेगा और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। १४ वह
मेरी महिमा करेगा क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर
तुम्हें बताएगा। १५ जो कुछ पिता का है वह सब मेरा है
इस लिये मैं ने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें

बताएगा । १६ थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे और फिर
थोड़ी देर में मुझे देखोगे । १७ तब उस के कितने चेलों ने
आपस में कहा यह क्या है जो वह हम से कहता है कि
थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी देर में मुझे
देखोगे और यह इस लिये कि मैं पिता के पास जाता हूं ।
१८ सो उन्हों ने कहा यह थोड़ी देर जो वह कहता है क्या
बात है हम नहीं जानते कि क्या कहता है । १९ यीशु ने
यह जानकर कि वे मुझ से पूछना चाहते हैं उन से कहा
क्या तुम आपस में मेरी इस बात के विषय में पूछ पाछ
करते हो कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे और फिर
थोड़ी देर में मुझे देखोगे । २० मैं तुम से सच सच कहता
हूं कि तुम रोओगे और बिलाप करोगे पर संसार आनन्द
करेगा । तुम्हें शोक होगा पर तुम्हारा शोक आनन्द बन
जाएगा । २१ जब स्त्री जनने लगती है तो उस को शोक
होता है क्योंकि उस की दुख की घड़ी आ पहुंची पर जब
वह बालक जन चुकी तो इस आनन्द से कि जगत में एक
मनुष्य उत्पन्न हुआ उस संकट का फिर स्मरण नहीं करती ।
२२ और तुम्हें भी अब तो शोक है पर मैं तुम से फिर
मिलूंगा और तुम्हारे मन में आनन्द होगा और तुम्हारा
आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा । २३ उस दिन तुम मुझ
से कुछ न पूछोगे । मैं तुम से सच सच कहता हूं यदि पिता
से कुछ मांगोगे तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा । २४ अब

तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा । मांगो तो पाओगे
कि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए ॥
२५ मैं ने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में कही हैं पर वह
समय आता है कि मैं तुम से दृष्टान्तों में और नहीं कहूंगा
पर खोलकर तुम्हें पिता के विषय में बताऊंगा । २६ उस
दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे और मैं तुम से यह नहीं
कहता कि मैं तुम्हारे लिये पिता से बिनती करूंगा ।
२७ क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है इस
लिये कि तुम ने मुझ से प्रीति रक्खी है और यह भी
प्रतीति की है कि मैं पिता की ओर से निकल आया ।
२८ मैं पिता से निकलकर जगत में आया हूं फिर जगत
को छोड़कर पिता के पास जाता हूं । २९ उस के चेलों
ने कहा देख अब तो तू खोलकर कहता है और कोई
दृष्टान्त नहीं कहता । ३० अब हम जान गए कि तू सब
कुछ जानता है और तुझे प्रयोजन नहीं कि कोई तुझ से
पूछे इस से हम प्रतीति करते हैं कि तू परमेश्वर से निकला
है । ३१ यह सुन यीशु ने उन से कहा क्या तुम अब
प्रतीति करते हो । ३२ देखो वह घड़ी आती है बरन आ
पहुंची कि तुम सब तित्तर बित्तर होकर अपना अपना
मार्ग लोगे और मुझे अकेला छोड़ दोगे तौभी मैं अकेला
नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है । ३३ मैं ने ये बातें तुम
से इस लिये कही हैं कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले ।

संसार में तुम्हें क्लेश होता है पर ढाढ़स बांधो मैं ने संसार
को जीता है॥

१७ यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखें
आकाश की ओर उठाकर कहा हे पिता वह
घड़ी आ पहुँची अपने पुत्र की महिमा कर कि पुत्र भी
तेरी महिमा करे। २ क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों
पर अधिकार दिया कि जिन्हें तू ने उस को दिया है उन
सब को वह अनन्त जीवन दे। ३ और अनन्त जीवन यह
है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह
को जिसे तू ने भेजा है जानें। ४ जो काम तू ने मुझे
करने को दिया था उसे पूरा करके मैं ने पृथिवी पर तेरी
महिमा की है। ५ और अब हे पिता तू अपने साथ मेरी
महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहिले
मेरी तेरे साथ थी। ६ मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर
प्रगट किया जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया। वे तेरे
थे और तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्हों ने तेरे बचन
को मान लिया है। ७ अब वे जान गए हैं कि जो कुछ
तू ने मुझे दिया है सब तेरी ओर से है। ८ क्योंकि जो
बातें तू ने मुझे पहुँचा दीं मैं ने उन्हें उन को पहुँचा
दिया और उन्हों ने उन को ग्रहण किया और सच सच
जान लिया है कि मैं तेरी ओर से निकला हूं और प्रतीति
कर ली कि तू ही ने मुझे भेजा। ९ मैं उन के लिये बिनती

करता हूं संसार के लिये बिनती नहीं करता हूं पर उन्हीं के
लिये जिन्हें तू ने मुझे दिया है क्योंकि वे तेरे हैं। १०
और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है और जो तेरा है वह
मेरा है और इन मे मेरी महिमा प्रगट है। ११ मैं आगे
को जगत में न रहूंगा पर ये जगत में रहेंगे और मैं
तेरे पास आता हूं। हे पवित्र पिता अपने उस नाम
से जो तू ने मुझे दिया है उन की रक्षा कर कि वे हमारी
नाईं एक हों। १२ जब मैं उन के साथ था तो मैं ने तेरे
उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है उन की रक्षा की मैं
ने उन की चौकसी की और बिनाश के पुत्र को छोड़ उन
में से कोई नाश न हुआ इस लिये कि पवित्र शास्त्र की
बात पूरी हो। १३ पर अब मैं तेरे पास आता हूं और
ये बातें जगत मे कहता हूं कि वे मेरा आनन्द अपने में पूरा
पाएं। १४ मैं ने तेरा बचन उन्हें पहुंचा दिया है और
संसार ने उन से बैर किया क्योंकि जैसा मैं संसार का
नहीं वैसे ही वे संसार के नहीं। १५ मैं यह बिनती नहीं
करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले पर यह कि तू उन्हें
उस दुष्ट से बचाए रख। १६ जैसे मैं संसार का नहीं वैसे
ही वे भी संसार के नहीं। १७ सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र
कर। १८ तेरा बचन सत्य है। जैसे तू ने जगत में मुझे
भेजा वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा। १९ और
उन के लिये मैं अपने आप को पवित्र करता हूं कि वे

भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं । २० मैं केवल इन्हीं
के लिये बिनती नहीं करता पर उन के लिये भी जो इन
के बचन के द्वारा मुझ पर बिश्वास करेंगे कि वे सब
एक हों । २१ जैसा तू हे पिता मुझ में है और मैं तुझ
में हूं वैसे ही वे भी हम में हों इस लिये कि जगत प्रतीति
करे कि तू ही ने मुझे भेजा । २२ और वह महिमा जो तू
ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे
कि हम एक हैं । २३ मैं उन में और तू मुझ में कि वे
सिद्ध होकर एक हो जाएं और जगत जाने कि तू ही ने
मुझे भेजा और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रक्खा वैसा ही
उन से प्रेम रक्खा । २४ हे पिता मैं चाहता हूं कि जिन्हें
तू ने मुझे दिया है जहां मैं हूं वहां वे भी मेरे साथ हों कि
वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है क्योंकि
तू ने जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझ से प्रेम रक्खा ।
२५ हे धार्मिक पिता संसार ने तुझे नहीं जाना पर मैं ने
तुझे जाना और इन्हों ने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा ।
२६ और मैं ने तेरा नाम उन को बताया और बताता रहूंगा
कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था वह उन में रहे और मैं
उन में रहूं ॥

१८. यीशु ये बातें कह कर अपने चेलों के साथ
किद्रोन के नाले के पार गया वहां एक
बारी थी जिस में वह और उस के चेले गए । २ उस का

पकड़वानेवाला यहूदा भी वह जगह जानता था क्योंकि
यीशु अपने चेलों के साथ वहां जाया करता था। ३ तब
यहूदा पलटन को और महायाजकों और फरीसियों की ओर
से प्यादों को लेकर दीपकों और मशालों और हथियारों
को लिये हुए वहां आया। ४ सो यीशु उन सब बातों
को जो उस पर आनेवाली थीं जानकर निकला और उन से
कहने लगा किसे ढूंढ़ते हो। ५ उन्हों ने उस को उत्तर दिया
यीशु नासरी को। यीशु ने उन से कहा मैं ही हूं। और
उस का पकड़वानेवाला यहूदा भी उन के साथ खड़ा था।
६ उस के यह कहते ही कि मैं हूं वे पीछे हटकर भूमि
पर गिर पड़े। ७ तब उस ने फिर उन से पूछा तुम किस
को ढूँढ़ते हो। ८ वे बोले यीशु नासरी को। यीशु ने उत्तर
दिया मैं तो तुम से कह चुका कि मैं ही हूं सो यदि मुझे
ढूँढ़ते हो तो इन्हें जाने दो। ९ यह इस लिये हुआ कि
वह बचन पूरा हो जो उस ने कहा था कि जिन्हें तू ने मुझे
दिया उन में से मैं ने एक को भी न खोया। १० शमौन
पतरस ने तलवार जो उस के पास थी खींची और महा-
याजक के दास पर चलाकर उस का दहिना कान उड़ा
दिया उस दास का नाम मलखुस था। ११ तब यीशु ने
पतरस से कहा अपनी तलवार काठी में रख। जो कटोरा
पिता ने मुझे दिया है क्या मै उसे न पिऊं॥

१२ तब सिपाहियों और उन के सूबेदार और यहूदियों
के प्यादों ने यीशु को पकड़कर बांध लिया। १३ और पहिले
उसे हन्ना के पास ले गए क्योंकि वह उस बरस के महाया-
जक काइफा का ससुर था। १४ यह वही काइफा था जिस
ने यहूदियों को सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिये
एक पुरुष का मरना अच्छा है॥

१५ शमौन पतरस और एक और चेला भी यीशु के
पीछे हो लिए। यह चेला महायाजक का जान पहचान था
और यीशु के साथ महायाजक के आंगन में गया। १६
परन्तु पतरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा सो वह दूसरा चेला
जो महायाजक का जान पहचान था बाहर निकला और द्वार-
पालिन से कहकर पतरस को भीतर ले आया। १७ उस
दासी ने जो द्वारपालिन थी पतरस से कहा क्या तू भी इस
मनुष्य के चेलों में से है। उस ने कहा मैं नहीं हूं। १८
दास और प्यादे जाड़े के कारण कोएले धधकाकर खड़े ताप
रहे थे और पतरस भी उन के साथ खड़ा ताप रहा था॥

१९ तब महायाजक ने यीशु से उस के चेलों के विषय
और उस के उपदेश के विषय पूछा। २० यीशु ने उस को
उत्तर दिया कि मैं ने जगत से खोलकर बातें कीं मैं ने
सभाओं और मन्दिर में जहां सब यहूदी इकट्ठे हुआ करते
हैं सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ नहीं कहा। २१ तू
मुझ से क्यों पूछता है सुननेवालों से पूछ कि मैं ने उन से

क्या कहा। देख वे जानते हैं कि मैं ने क्या क्या कहा।
२२ जब उस ने यह कहा तो प्यादों में से एक ने जो पास
खड़ा था यीशु को थप्पड़ मारकर कहा क्या तू महायाजक
को यों उत्तर देता है। २३ यीशु ने उसे उत्तर दिया यदि
मैं ने बुरा कहा तो उस बुराई पर गवाही दे पर यदि भला
कहा तो मुझे क्यों मारता है। २४ हन्ना ने उसे बंधे हुए
काइफा महायाजक के पास भेज दिया॥

२५ शमौन पतरस खड़ा हुआ ताप रहा था। तब
उन्हों ने उस से कहा क्या तू भी उस के चेलों में से है।
२६ उस ने मुकर के कहा मैं नहीं हूं। महायाजक के दासों
में से एक जो उस के कुटुम्ब में से था जिस का कान पत
रस ने काट डाला था बोला क्या मैं ने तुझे उस के साथ
बारी में न देखा था। २७ पतरस फिर मुकर गया और
तुरन्त मुर्ग ने बांग दी॥

२८ और वे यीशु को काइफा के पास से किले को
ले गए और भोर का समय था पर वे आप किले के भीतर
न गए कि अशुद्ध न हों पर फसह खा सकें। २९ सो पीला-
तुस उन के पास बाहर निकल आया और कहा तुम इस
मनुष्य पर किस बात की नालिश करते हो। ३० उन्हों ने
उस को उत्तर दिया कि यदि वह कुकर्मी न होता तो हम
उसे तेरे हाथ न सौंपते। ३१ पीलातुस ने उन से कहा तुम
ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार उस का न्याय

करो। यहूदियों ने उस से कहा हमें अधिकार नहीं कि
किसी का प्राण लें। ३२ यह इस लिये हुआ कि यीशु की
वह बात पूरी हो जो उस ने यह पता देते हुए कही थी
कि उस का मरना कैसा होगा॥

३३ तब पीलातुस फिर किले के भीतर गया और यीशु
को बुलाकर उस से पूछा क्या तू यहूदियों का राजा है।
३४ यीशु ने उत्तर दिया क्या तू यह बात अपनी ओर से
कहता है या औरों ने मेरे विषय में तुझ से कही।
३५ पीलातुस ने उत्तर दिया क्या मैं यहूदी हूं। तेरी ही
जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा तू ने क्या
किया। ३६ यीशु ने उत्तर दिया कि मेरा राज्य इस जगत
का नहीं यदि मेरा राज्य इस जगत का होता तो मेरे सेवक
लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता। पर अब
मेरा राज्य यहां का नहीं। ३७ पीलातुस ने उस से कहा
तो क्या तू राजा है। यीशु ने उत्तर दिया कि तू कहता है
क्योंकि मैं राजा हूं मैं ने इस लिये जन्म लिया और इस
लिये जगत में आया हूं कि सत्य पर साक्षी दूं जो कोई
सत्य का है वह मेरा शब्द सुनता है। ३८ पीलातुस ने
उस से कहा सत्य क्या है॥

और यह कहकर वह फिर यहूदियों के पास निकल
गया और उन से कहा मैं तो उस में कुछ दोष नहीं पाता।
३९ पर तुम्हारी यह रीति है कि मैं फसह में तुम्हारे लिये

एक जन को छोड़ दूं सो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे
लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूं । ४० तब उन्हों ने
फिर चिल्लाकर कहा इसे नहीं पर बरअब्बा को और बर
अब्बा डाकू था ॥

१९. इस पर पीलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े
लगवाए । २ और सिपाहियों ने कांटों का
मुकुट गूंथकर उस के सिर पर रक्खा और उसे बैजनी वस्त्र
पहिनाया । ३ और उस के पास आ आकर कहने लगे हे
यहूदियों के राजा प्रणाम और उसे थप्पड़ भी मारे । ४ तब
पीलातुस ने फिर बाहर निकलकर लोगों से कहा देखो मैं
उसे तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूं इस लिये कि तुम
जानो कि मैं उस में कुछ दोष नहीं पाता । ५ सो यीशु
कांटों का मुकुट और बैजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला
और पीलातुस ने उन से कहा देखो यह मनुष्य । ६ जब
महायाजकों और प्यादों ने उसे देखा तो चिल्लाकर कहा कि
क्रूस पर चढ़ा क्रूस पर । पीलातुस ने उन से कहा तुम ही
उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ क्योंकि मैं उस में दोष नहीं
पाता । ७ यहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि हमारी भी
व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने
के योग्य है क्योंकि उस ने अपने आप को परमेश्वर का
पुत्र बनाया । ८ जब पीलातुस ने यह बात सुनी तो और
भी डर गया । ९ और फिर किले के भीतर गया और यीशु

से कहा तू कहां का है पर यीशु ने उसे कुछ उत्तर न दिया।
१० पीलातुस ने उस से कहा मुझ से क्यों नहीं बोलता
क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का मुझे अधिकार
है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।
११ यीशु ने उत्तर दिया कि यदि तुझे ऊपर से न दिया
जाता तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता इस लिये
जिस ने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है उस का पाप अधिक
है। १२ इस से पीलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा पर
यहूदियों ने चिल्ला चिल्लाकर कहा यदि तू इस को छोड़
दे तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं जो कोई अपने आप
को राजा बनाता है वह कैसर का सामना करता है। १३ ये
बातें सुनकर पीलातुस यीशु को बाहर लाया और उस जगह
जो चबूतरा और इब्रानी में गब्बता कहलाता है न्याय-
आसन पर बैठा। १४ यह फसह की तैयारी का दिन और छठे
घंटे के लगभग था। तब उस ने यहूदियों से कहा देखो यही
है तुम्हारा राजा। १५ पर वे चिल्लाए कि उस का काम तमाम
कर उसे क्रूस पर चढ़ा। पीलातुस ने उन से कहा क्या मैं
तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं। महायाजकों ने उत्तर दिया
कि कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं। १६ तब उस ने
उसे उन के हाथ सौंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए॥

१७ तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस
उठाए हुए उस जगह तक बाहर गया जो खोपड़ी की जगह

कहलाती है और इब्रानी में गुलगुता। १८ वहां उन्हों ने
उसे और उस के साथ और दो मनुष्यों को क्रूस पर
चढाया एक को इधर और एक उधर और बीच में यीशु
को। १९ और पीलातुस ने दोष पत्र लिखकर क्रूस पर लगा
दिया और उस में यह लिखा हुआ था यीशु नासरी यहू
दियों का राजा। २० यह दोष पत्र बहुत यहूदियों ने पढ़ा
क्योंकि वह स्थान जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया नगर
के पास था और पत्र इब्रानी और लतीनी और यूनानी
में लिखा हुआ था। २१ तब यहूदियों के महायाजकों ने
पीलातुस से कहा यहूदियों का राजा मत लिख पर यह
कि उस ने कहा मैं यहूदियों का राजा हूं। २२ पीलातुस
ने उत्तर दिया कि मैं ने जो लिख दिया सो लिख दिया॥

२३ जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके तो
उस के कपडे लेकर चार भाग किये हर सिपाही के लिये
एक भाग और कुरता भी लिया पर कुरता बिन सीअन
ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था। २४ इस लिये उन्हों ने
आपस में कहा हम इस को न फाड़ें पर उस पर चिट्ठी
डालें कि वह किस का होगा। यह इस लिये हुआ कि
पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कि उन्हों ने मेरे कपडे आपस
में बांट लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली। २५ सो सिपा-
हियों ने यही किया। पर यीशु के क्रूस के पास उस की
माता और उस की माता की बहिन मरयम क्लोपास की

पत्नी और मरयम मगदलीनी खड़ी थी । २६ यीशु ने अपनी
माता और उस चेले को जिस से वह प्रेम रखता था पास
खड़े देख कर अपनी माता से कहा हे नारी देख यह तेरा
पुत्र है । २७ तब उस चेले से कहा यह तेरी माता है और
उसी समय से वह चेला उसे अपने घर ले गया ॥

२८ इस के पीछे यीशु ने यह जानकर कि अब सब
कुछ हो चुका इस लिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो
कहा मैं पियासा हूं । २६ वहां एक सिरके से भरा हुआ
बर्तन धरा था सो उन्हों ने सिरके में भिगोए हुए इस्पंज
को जूफे पर रखकर उस के मुंह से लगाया । ३० जब यीशु
ने वह सिरका लिया तो कहा पूरा हुआ और सिर झुका-
कर प्राण त्याग दिया ॥

३१ इस लिये कि वह तैयारी का दिन था यहूदियों
ने पीलातुस से बिनती की कि उन की टांगें तोड़ दी जाएं
और वे उतारे जाएं कि बिश्राम के दिन को क्रूसों पर न
रहें क्योंकि वह बिश्राम का दिन बड़ा दिन था । ३२ सो
सिपाहियों ने आकर पहिले की टांगें तोड़ीं तब दूसरे की
भी जो उस के साथ क्रूसों पर चढ़ाये गए थे । ३३ पर जब
यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है तो उस की
टांगें न तोड़ीं । ३४ पर सिपाहियों में से एक ने बरछे से
उस का पंजर बेधा और तुरन्त लोहू और पानी निकला ।
३५ जिस ने यह देखा उसी ने गवाही दी है और उस की

गवाही सच्ची है और वह जानता है कि सच कहता है कि
तुम भी विश्वास करो। ३६ ये बातें इस लिये हुईं कि
पवित्र शास्त्र की यह बात पूरी हो कि उस की कोई हड्डी तोड़ी
न जाएगी। ३७ फिर एक जगह और यह लिखा है कि जिसे
उन्हों ने बेधा उस पर दृष्टि करेंगे ॥

३८ इन बातों के पीछे अरमतियाह के यूसुफ ने जो
यीशु का चेला था पर यहूदियों के डर से इस बात को
छिपाये रखता था पीलातुस से बिनती की कि मैं यीशु
की लोथ को ले जाऊं और पीलातुस ने उस की सुनी और
वह आकर उस की लोथ ले गया। ३९ निकुदेमुस भी जो
पहिले यीशु के पास रात को गया था पचास सेर के अटकल
मिला हुआ गन्धरस और एलवा लेके आया। ४० तब
उन्हों ने यीशु की लोथ को लिया और यहूदियों के गाड़ने
की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध द्रव्य के साथ कफन में
लपेटा। ४१ उस जगह पर जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया
था एक बारी थी और उस बारी में एक नई कबर थी जिस
में कभी कोई न रक्खा गया था। ४२ सो यहूदियों की
तैयारी के दिन के कारण उन्हों ने यीशु को वहां रक्खा
क्योंकि वह कबर निकट थी ॥

२०. अठवारे के पहिले दिन मरयम मगदलीनी
भोर को अंधेरा रहते ही कबर पर आई
और पत्थर को कबर से हटा हुआ देखा। २ तब वह दौड़ी

और शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास जिस से
यीशु प्रेम रखता था आकर कहा वे प्रभु को कबर में से
निकाल ले गए हैं और हम नहीं जानतीं कि उसे कहां रख
दिया है। ३ तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर
कबर की ओर चले। ४ और दोनों साथ साथ दौड़ रहे थे
कि दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कबर पर पहिले
पहुंचा। ५ और झुककर कपड़े पड़े देखे तौभी वह भीतर
न गया। ६ तब शमौन पतरस उस के पीछे पीछे पहुंचा
और कबर के भीतर गया और कपड़े पड़े देखे। ७ और वह
अंगोछा जो उस के सिर से बन्धा हुआ था कपड़ों के साथ
पड़ा हुआ नहीं पर अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा।
८ तब दूसरा चेला भी जो कबर पर पहिले पहुंचा था भीतर
गया और देख कर बिश्वास किया। ९ वे तो अब तक
पवित्र शास्त्र की वह बात न समझते थे कि उसे मरे हुओं
में से जी उठना होगा। १० सो ये चेले अपने घर लौट
गए॥

११ पर मरयम रोती हुई कबर के पास बाहर खड़ी
रही और रोते रोते कबर की ओर झुककर, १२ दो स्वर्ग-
दूतों को उजले कपड़े पहिने हुए एक को सिरहाने और
दूसरे को पैताने बैठे देखा जहां यीशु की लोथ पड़ी थी।
१३ उन्हों ने उस से कहा हे नारी तू क्यों रोती है। उस
ने उन से कहा वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और नहीं

जानती कि उसे कहां रक्खा है । १४ यह कह कर वह पीछे
फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहचाना कि यह
यीशु है । १५ यीशु ने उस से कहा हे नारी तू क्यों रोती
है किस को ढूंढ़ती है । उस ने माली समझ कर उस से
कहा हे महाराज यदि तू ने उसे उठा लिया है तो मुझ
से कह कि उसे कहां रक्खा है और मैं उसे ले जाऊंगी ।
१६ यीशु ने उस से कहा मरयम । उस ने पीछे फिर कर
उस से इब्रानी में कहा रब्बूनी अर्थात् हे गुरु । १७ यीशु
ने उस से कहा मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के
पास ऊपर नहीं गया पर मेरे भाइयों के पास जाकर उन से
कह दे कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता और अपने
परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं ।
१८ मरयम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया कि मैं ने
प्रभु को देखा और उस ने मुझ से ये बातें कहीं ॥
१९ उसी दिन जो अठवारे का पहिला दिन था सांझ
होते हुए जब वहां के द्वार जहां चेले थे यहूदियों के डर
के मारे बन्द थे यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उन
से कहा तुम्हें शान्ति मिले । २० और यह कहकर उस ने
अपना हाथ और अपना पंजर उन को दिखाए । तब चेले
प्रभु को देखकर आनन्दित हुए । यीशु ने फिर उन से
कहा तुम्हें शान्ति मिले । २१ जैसे पिता ने मुझे भेजा है
वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं । २२ यह कहकर उस ने

उन पर फूंका और उन से कहा पवित्र आत्मा लो। २३ जिन
के पाप तुम क्षमा करो वे उन के लिये क्षमा किए गए हैं
जिन के तुम रक्खो वे रक्खे हुए हैं॥

२४ पर बारहों में से एक जन अर्थात् तोमा जो दिदु-
मुस कहलाता है जब यीशु आया तो उन के साथ न था।
२५ सो और चेले उस से कहने लगे हम ने प्रभु को देखा
है। उस ने उन से कहा जब तक मैं उस के हाथों में कीलों
के छेद न देख लूं और कीलों के छेदों में अपनी उंगली
न डाल लूं और उस के पंजर में अपना हाथ न डाल लूं
तो मैं प्रतीति न करूंगा॥

२६ आठ दिन के पीछे उस के चेले फिर घर के भीतर
थे और तोमा उन के साथ था और द्वार बन्द थे तो यीशु
आया और उस ने बीच में खड़े होकर कहा तुम्हें शान्ति
मिले। २७ तब उस ने तोमा से कहा अपनी उंगली यहां
लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर
में डाल और अविश्वासी नहीं पर विश्वासी हो। २८ यह
सुन तोमा ने उत्तर दिया हे मेरे प्रभु हे मेरे परमेश्वर।
२९ यीशु ने उस से कहा तू ने तो मुझे देखकर विश्वास
किया है धन्य वे हैं जिन्हों ने बिना देखे विश्वास किया॥

३० यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह चेलों के सामने
दिखाए जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गये। ३१ पर ये इस
लिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही पर-

मेश्वर का पुत्र मसीह है और बिश्वास करके उस के नाम से जीवन पाओ ।

२१. इन बातों के पीछे यीशु ने अपने आप को फिर चेलों को तिबिरियास की झील के किनारे दिखाया और इस रीति से दिखाया ।
२ शमौन पतरस और तोमा जो दिदुमुस कहलाता है और गलील के काना नगर का नतनएल और जबदी के पुत्र और उस के चेलों में से दो और जन इकट्ठे थे ।
३ शमौन पतरस ने उन से कहा मैं मछली पकड़ने को जाता हूं । उन्हों ने उस से कहा हम भी तेरे साथ चलते हैं सो वे निकल कर नाव पर चढ़े पर उस रात कुछ नहीं पकड़ा ।
४ भोर होते ही यीशु किनारे पर खड़ा हुआ तौभी चेलों ने न पहचाना कि यह यीशु है ।
५ तब यीशु ने उन से कहा हे बालको क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है उन्हों ने उत्तर दिया कि नहीं ।
६ उस ने उन से कहा नाव की दहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे सो उन्हों ने डाला और अब मछलियों की बहुतायत के कारण उसे खींच न सके ।
७ इस लिये उस चेले ने जिस से यीशु प्रेम रखता था पतरस से कहा यह तो प्रभु है । शमौन पतरस ने यह सुन कर कि प्रभु है कमर में अंगरखा कस लिया क्योंकि वह नंगा था और झील में कूद पड़ा ।
८ पर और चेले डोंगी पर मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते हुए आए क्योंकि वे किनारे से

दूर नहीं कोई दो सौ हाथ पर थे। ९ जब किनारे पर उतरे
तो उन्हों ने कोएले की आग और उस पर मछली रक्खी
हुई और रोटी देखी। १० यीशु ने उन से कहा जो मछ-
लियां तुम ने अभी पकड़ी हैं उन में से कुछ लाओ।
११ शमौन पतरस ने डोंगी पर चढ़ कर एक सौ तिर्पन
बड़ी मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा और
इतनी मछलियां होने से भी जाल न फटा। १२ यीशु ने
उन से कहा कि आओ भोजन करो और चेलों में से किसी
को हियाव न हुआ कि उस से पूछे कि तू कौन है क्योंकि
वे जानते थे कि प्रभु ही है। १३ यीशु आया और रोटी
लेकर उन्हें दी और वैसे ही मछली भी। १४ यह तीसरी
बार है कि यीशु मरे हुओं में से जी उठने के पीछे चेलों
को दिखाई दिया॥

१५ भोजन करने के पीछे यीशु ने शमौन पतरस से
कहा हे शमौन यूहन्ना के पुत्र क्या तू मुझ से इन से बढ़-
कर प्रेम रखता है। उस ने उस से कहा हां प्रभु तू जानता
है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं। १६ उस ने उस से कहा
मेरे मेमनों को चरा। उस ने फिर दूसरी बार उस से कहा।
हे शमौन यूहन्ना के पुत्र क्या तू मुझ से प्रेम रखता है।
उस ने उस से कहा हां प्रभु तू जानता है कि मैं तुझ से
प्रीति रखता हूं। उस ने उस से कहा मेरी भेड़ों की रख-
वाली कर। १७ उस ने तीसरी बार उस से कहा हे शमौन

यूहन्ना के पुत्र क्या तू मुझ से प्रीति रखता है। पतरस
उदास हुआ कि उस ने उस से तीसरी बार कहा क्या तू
मुझ से प्रीति रखता है और उस से कहा हे प्रभु तू तो
सब कुछ जानता है तू जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता
हूं। यीशु ने उस से कहा मेरी भेड़ों को चरा। १८ मैं
तुझ से सच सच कहता हूं जब तू जवान था तो अपनी
कमर बांध कर जहां चाहता था वहां फिरता था पर जब
तू बूढ़ा होगा तो अपने हाथ लम्बे करेगा और दूसरा तेरी
कमर बांध कर जहां तू न चाहेगा वहां तुझे ले जाएगा।
१९ उस ने इन बातों से पता दिया कि पतरस कैसी मृत्यु
से परमेश्वर की महिमा करेगा और यह कह कर उस से
कहा मेरे पीछे हो ले। २० पतरस ने फिरकर उस चेले
को पीछे से आते देखा जिस से यीशु प्रेम रखता था और
जिस ने बियारी के समय उस की छाती की ओर झुक कर
पूछा था हे प्रभु तेरा पकड़वाने वाला कौन है। २१ उसे
देख कर पतरस ने यीशु से कहा हे प्रभु इस का क्या हाल
होगा। २२ यीशु ने उस से कहा यदि मैं चाहूं कि वह
मेरे आने तक ठहरा रहे तो तुझे क्या। २३ तू मेरे पीछे
हो ले। इस लिये भाइयों में यह बात फैल गई कि वह
चेला न मरेगा तौभी यीशु ने उस से यह नहीं कहा कि
यह न मरेगा पर यह कि यदि मैं चाहूं कि यह मेरे आने
तक ठहरा रहे तो तुझे क्या॥

२४ यह वही चेला है जो इन बातों की गवाही देता
है और जिस ने इन बातों को लिखा और हम जानते हैं
कि उस की गवाही सच्ची है ॥
२५ और भी बहुत से काम हैं जो यीशु ने किए।
यदि वे एक एक करके लिखे जाते तो मैं समझता हूं कि
पुस्तकें जो लिखी जातीं जगत में भी न समातीं ॥

The Mission Press, Allahabad.